

छन्द रत्नावली

लेखक—

श्री० राजाराम शास्त्री

तथा

रामरूप शास्त्री, बी० ए० प्रभाकर
(प्रोफेसर डी० ए० बी० कालिज, लाहौर)

द्वितीय
सम्पन्न

जुलाई १९२४

{ मूल्य १।३)
{ सजिन्द

प्रकाशक—

प० राजाराम

मालिक—बाम्बे मैशीन प्रेस

लाहौर ।

मुद्रक—

श्रीकृष्ण दीक्षित

बाम्बे मैशीन प्रेस,

मोहनलाल रोड, लाहौर ।

विषय-सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	भूमिका	१
१	छन्द-रचना	११
२	मात्रिक-सम-छन्द	१३
३	मात्रिक अर्धसम छन्द	८५
४	मात्रिक विषम छन्द	६५
५	मात्रिक षडक छन्द	१०४
६	वर्ण-सम-वृत्त	११२
७	वर्णार्धसम वृत्त	१७८
८	वर्ण-विषम-वृत्त	१८२
९	वर्ण-द्व्यकवृत्त	१८७
१०	समय छन्द	१६७
११	मुक्त या स्वच्छन्द छन्द	२००
	साधारण अभ्यास	२०४



छन्द-रत्नावली

भूमिका

छन्दशास्त्र जिस वाक्यरचना में अक्षरों या मात्राओं की सख्या और गति-यति का नियम हो, उसे छन्द कहते हैं, और जिस ग्रन्थ में छन्दों की शिक्षा दी हो, उसे छन्दशास्त्र या छन्दशास्त्र* कहते हैं।

गद्य और पद्य पिना छन्द की वाक्यरचना को गद्य और छन्दोपद वाक्य-रचना को पद्य कहते हैं।

गद्य और पद्य में ये भेद हैं। (१) गद्य में इच्छा के अनुसार शब्द न्यूनाधिक लिखे जाते हैं, पर पद्य में उस छन्द के नियत अक्षरों या मात्राओं के अन्दर ही अपना वाक्य पूरा

* संस्कृत छन्द शब्द हिन्दी में छन्द बोध जाग दे। जो हिन्दी छन्दशास्त्र अपने मुख संस्कृत रूप से छन्दशास्त्र या छन्दशास्त्र बोला जाता है। छन्दोर्वद, छन्दोर्वद, छन्दोर्वद इत्यादि शब्द भी कुछ संस्कृत हैं।

करना होता है। (२) गद्य में कर्ना आदि अपने नियत क्रम में रखे जाते हैं, पद्य में यह नियम नहीं होता। (३) गद्य में प्रचलित शब्द अपने अग्रिष्ठ रूप में धोले जाते हैं, पद्य में कभी कभी विरुद्ध रूप में भी धोले जाते हैं, जैसे दुःख को दूख।

बिना छन्द की रचना से छन्दोपम रचना में ये विशेषताएँ होती हैं। (१) छन्द का हर एक चरण अपने छन्द की विशेषताएँ तोल में पूरा उतरता है। इससे छन्द पढ़ने में सुहावने प्रतीत होते हैं और सुस्वर गाए जाते हैं, अतएव बड़े प्यारे लगते हैं। और जब राग रागनियों में गाए जाते हैं तब तो चित्त को मोह ही लेते हैं। (२) वाणी के तीन रूप हैं— गद्य, पद्य और गीति। वाणी का जो प्रभाव गद्य में है, पद्य में उससे कई गुना अधिक होता है और गीति में तो उससे भी कई गुना अधिक हो जाता है सो गीति वाणी के प्रभाव की परा काष्ठा है। इस गीति का आचार भी छन्द ही होते हैं, अतएव छन्द ही वाणी में ऊँचे से ऊँचा प्रभाव ले आते हैं। (३) छन्द रुचिकर होते हैं, उनमें जी लगता है, अतएव जल्दी कण्ठस्थ होते हैं, उचित अवसर पर उन्हीं अक्षरों में दुहराये जाते हैं और कण्ठस्थ बने रहते हैं।

छन्दों में ऐसी मोहिनी शक्ति है कि हर एक व्यक्ति उन

से प्यार करता है और हर एक अवस्था में

छन्दों की सर्वप्रियता प्यार करता है। छन्द कविजनों के बहुत प्यारे

हैं, यह तो जगत्प्रसिद्ध है। पर क्या को

ऐसा व्यक्ति भी है, जिसकी ये प्यारे न लगते हों ?

देखो, एक ओर वह ब्रह्मज्ञानी अपने ब्रह्मानुभव को छन्दों में गाता हुआ मस्त हो होकर झूम रहा है। दूसरी ओर वह भक्त प्रभु-भक्ति के गीत गाता हुआ प्रेम में मग्न हो रहा है। तीसरी ओर एक धर्म शास्त्री धर्म की व्यवस्थायों को और नीतिशास्त्री नीति के नियमों को प्रभावशाली बनाने के लिए छन्दों में रचना कर रहा है।

शास्त्रियों की बात भी रहने दो। वह देखो, गडरिये अपनी भेड़-बकरियों के पीछे और ग्याले अपनी गौनों के पीछे मीठे मीठे छन्द (सद) रचते और गाते फिरते हैं। गेलों में अपढ़ गँवार भी अपने प्यारे छन्द रच लाते और अपने प्रामीण बाजों के साथ पूरे जोश से गाते फिरते हैं। गेलों में लड़के-छड़कियाँ उस उस गेल के नियत छन्द बोलते हैं। छियाँ चरखा कातती हुई छन्द गाती हैं। चको पीसनी हुई छन्द गाती हैं। विवाह में सुहाग और घोड़ियाँ छन्दों में गाती हैं। घर के लिए सेहरे छन्दों में रचे जाते हैं और घर से छन्दियों पर छन्द बुटपाए जाते हैं। वहाँ तक कहे, विरह की पीटा छन्दों में, मिटा का हरं छन्दों में, मृत्यु का शोक छन्दों में, पिलाप छन्दों में और धैर्य छन्दों में गाए जाते हैं। छन्द उत्सवों में हरं के बढ़ाने वाले और शोक में अन्दर का उबाल निकाल कर दुःख के पटाने और मिटाने वाले होते हैं। इसी लिए सारी व्यवस्थायों में सब को प्रिय लगाने हैं।

हमारे शारीर्य मानविय का भाविसम्भ्र अम्भेद भाव

उन्दों में है । एन्दा क जिए उन्द (उन्द)

(उन्द) का इतिहास

नाम भी मय म परने अम्भेद में थापा है,

जो पीछे सस्कृत, प्राकृत और सिन्धी के शारे भाविसय में समारण
हुमा है और मीष में नी प्रसिद्ध है । वेदों में उन्दों के विशेष
नाम (गायत्री भादि) भी भाप है । यदाजुषगणितों में वैदिक
उन्दों क भेद दिखलाय है और उदाजान के विना वेदपाठ में
द्वार दिखलाया है । अनपय उन्दशास्त्र वेद के छ अङ्गों में एक
अङ्ग है । पीछे, सस्कृत के कवियों ने वैदिक उन्दा में और
उतारे अतिरिक्त नय नय उन्दों में भी अपनी रचनाएँ कीं ।
उत सप की शिगा के लिए प्रमथद उन्दशास्त्र रचे गए ।
सस्कृत में उन्दोरचना की शिगा का मय ने पुराना प्रमथ, जो
इस समय मिलता है, विंगलाचार्य का रचा गित उन्दशास्त्र
है । इसमें वैदिक और लौकिक उन्दों के लक्षण और वेद
बतलाय है । इस प्रमथ की रच कर विंगलाचार्य ने इतना नाम
पाया है कि विंगल शास्त्र उन्दशास्त्र का पर्याय बन गया है ।
विंगल कहो उन्दशास्त्र कहो, एक ही मान समझी जायी है ।
सस्कृत में उन्दा की शिगा के लिए फार मय का इलाजामर भी
इस विषय का एक पूर्ण प्रमथ है । इसमें समी प्रचलित उन्दों
के लक्षण और लक्ष्य दिखलाय है, और उन्दों के प्रसार भी
बतलाय है । इसमें एक और विशेषता यह रफनी है कि जिस
उन्द का जो लक्षण किया है, वही उसका लक्ष्य भी है । सस्कृत में

इस विषय के और दो ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं, गङ्गादास की छन्दोमञ्जरी और बालिदास का श्रुतबोध ।

हिन्दी में भी छन्दोग्रन्थ बहुत से रचे गए हैं जैसे महाकवि मनिराम का छन्दसार पिंगल, कविराज मुख्देव मिश्र का वृत्तविचार, बलरौर का पिंगल मनहरण, कुँवर गोपाल सिंह का पिंगल प्रकाश, रसपुञ्जदास का वृत्तविनोद, भिंगारीदास का छन्दाण्ड और छन्दप्रकाश, गोपालभट्ट का पिंगलप्रकरण, प्रज्जाल भट्ट का छन्दरत्नाकर, पशाकर भट्ट का छन्दमञ्जरी इत्यादि, पर इन का अथ प्रचार नहीं रहा । आज फल श्री जगन्नाथ प्रसाद 'मानु' के छन्द प्रभाकर, श्री अथर्व उपाध्याय के नवीन पिंगल, श्री पुत्तनलाल के सरल पिंगल, और प० रामनरेश त्रिपाठी की हिन्दी पद्यरचना का प्रचार है । नए ढंग पर लिखे हुए ये सब ग्रन्थ परीक्षार्थियों के लिये अधिक उपयुक्त हैं ।

ये प्रयत्न अभी जारी हैं और योग्य विद्वानों के नए प्रयत्न उपयोगिता तथा सरलता की दृष्टि से उत्तरोत्तर अधिक सफल हो रहे हैं ।

छन्द इतने ही हैं, इसमें अधिक नहीं, यह जानो ही इच्छा रखना न कमी हुई, न होगी । येशों में जितने

छन्द हैं, उन सब से निराले बहुत से नये छन्द संस्कृत साहित्यकारों में पाए जाते हैं । येशों में अक्षरछन्द या वर्णशृङ्खला ही है, मात्रा-छन्द कोई नहीं । लौकिक संस्कृत में मात्रा-छन्द भी है : हिन्दी में कई छन्द उतारके अपने हैं, कई संस्कृत से

धाए हैं, कई उर्दू से। अब नए छन्द न बनें, ऐसी कोई रोक नहीं। अक्षरों या मात्राओं का जो भी तोल बोलने-गाने में शोभा पाएगा, यही एक छन्द बन जायगा। हाँ, संस्कृत और हिन्दी में छन्दों के जो प्रस्तार दिये हैं उनसे एक एक छन्द के इतने भेद बन जाते हैं, कि दूसरी भाषाओं के तथा सर्वथा नये छन्द भी उसके किसी एक प्रकार में आ ही जाते हैं। जैसाकि गालिय का यह उर्दू पद्य—

रहिए अब ऐसी जगह, चलकर जहाँ कोई न हो।

हमसुजन कोई न हो, और हम जहाँ कोई न हो।

वे दरोदीमार सा, इक घर बनाना चाहिए।

कोई हमसाया न हो, औ पासर्वा कोई न हो।

पड़िए गर बीमार तो, कोई न हो तीमारदार।

और गर मर जाइए, तो नोहराँ कोई न हो।

यह २६ मात्राओं का छन्द है। १२, १४ पर यति है। पहली पक्ति में 'रहिए' और पाँचवीं में 'पड़िए' का ए ह्रस्व थोड़ा जाता है। सो यह २६ मात्राओं के गीतिका छन्द का एक भेद बन जाता है। पर सत्य बात तो यह है, कि एक ही गिनती के अक्षरों में गुरु लघु के स्थान-भेद और गति-यति भेद से भिन्न भिन्न छन्द बन जाते हैं। जैसे १७ अक्षरों के छन्द की ६, ११ पर यति हो और गुरु लघु का नियम* 'य म न स

* (पा० टि०) म न म य ज र स त, ग ल—ये अक्षर गणों और गुरु लघु के वाचक हैं। देखो प्रथम अध्याय का गण-विचार प्रकरण।

म ल ग' के रूप में हो तो शिपरिणी होता है । जैसे—
 अनूठी बामा से, सरस सुपमा से सुरस से ।
 यना जो देती थी, यह गुणमयी भू चिपिन की ॥
 निराले फूलों की, विविध दृष्टवाली अनुपमा ।
 जड़ी वृद्धी नाना, यह फलधती थीं विलसती ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

और १७ ही अक्षरों के छन्द की ४, ६ और ७ पर यति हो और गुरुलघु का नियम म म न त त ग ग के रूप में हो तो मन्दाक्रान्ता होता है । जैसे—

तारे दूधे, तम टल गया, लालिमा ध्योम छाई ।
 पछी थोले, नमचर जगे, ज्योति फँटी दिशा में ॥
 शाखा खोली, सफल तय की, यारि भ्रमोज फूले ।
 धीरे धीरे, दिनफर कड़े, तामसी रात घीती ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

इसलिए समानाक्षर छन्दों में जो जय गति-यति एक दूसरे से मिलान हो तो उस मिलानना का भेद दिखलाने के लिए नामभेद होता उचित है और गति-यति मिलनी जुटनी हो तो वहाँ समानाक्षर छन्दों में एक छन्द के अनेक भेद मानने चाहिये ।

छन्दशास्त्र के इस मन्थ का नाम छन्दःशरती है । इसमें

छन्दरत्नावली

छन्दान म काम आने वाली सहा-परिभाषाएँ सरल सुबोध भाषा में पहले लिखी हैं। पीछे, छन्दों के वर्णन में पहले मात्रिकछन्द, फिर अक्षर-छन्द का वर्णवृत्त दिए हैं। मात्रिक छन्दों में यह क्रम रक्खा है—पहले सम, फिर अर्धसम, फिर विषम, पीछे मात्रिकदण्डक दिये हैं। इसी प्रकार वर्णवृत्तों में भी पहले सम, फिर अर्धसम, फिर विषम और तदनन्तर वर्णदण्डक दिये हैं।

इस क्रम से मात्रिकछन्दों और वर्णवृत्तों का पूरा वर्णन करके, पीछे उभयछन्द दिये हैं। इनमें मात्राएँ तो अपूर्ण गिनती में और वर्ण अपनी गिनती में पूरे उतरते हैं। तदनन्तर मुक्त वा स्वच्छन्द छन्द दिये हैं। इनमें मात्राओं वा अक्षरों का कोई बंधन नहीं, तथापि लय में पूरे उतरने से ये वैसे ही सुहावने होते हैं। इस क्रम में छात्र-छात्राओं को कहीं झमेला नहीं पड़ता। सारा विषय सरलता से समझ में आजाता है। लक्षण सरल गद्य में दिये हैं, जो अपने आप समझ में आजाते हैं। उदाहरण भी हँद हँद कर सरल सुबोध और सरल दिये हैं, जो झट समझ में आजाएँ, प्यारे लगे और कण्ठस्थ हो जाएँ। छन्दों में यह चुनाव किया गया है, कि प्रसिद्ध छन्द सभी आ जाएँ। साथ ही अभ्यास भी दे दिये हैं, जिससे कि छात्र-छात्राएँ इन छन्दों की पहचान में पूरे च्युत्पन्न हो जाएँ। विद्यार्थियों के लिए जो कुछ भी उपयोगी है, वह सब कुछ

में देने का यत्न किया है। अप्रचलित या अल्पप्रचलित छन्द छोड़ दिए हैं ताकि विद्यार्थी अनावश्यक झमेले में न पड़ें। हमें विश्वास है कि इस ग्रन्थ को सम्यक् समझ कर विद्यार्थी छन्द विषय के न केवल गूढ ग्रन्थों से ही, बरन् नए छन्दों को भी भली भाँति जान जायेंगे।

छन्द-रत्नावली

प्रथम अध्याय

छन्द-रचना

(१) सामान्य ज्ञान—छन्दों के पहचानने, सुम्बर बोलने, गाने और रचने के लिए पहले इन सामान्य विषयों का जानना आवश्यक है—मक्षर या वर्ण, गुण-लघु, गुण, मात्रा, गति, यति चरण और तुक ।

अक्षर

(२) ध्वनियाँ (Sounds)—भाषाएँ ध्वनियों से बनी हैं । ध्वनियाँ दो प्रकार की होती हैं । एक जो मधेनी बोलती जा सकती है, उसको स्वर कहते हैं । जैसे 'मा, धो' दो ध्वनियाँ हैं । दोनों किसी दूसरी ध्वनि का बलदा विधे बिना मधेनी मधेनी 'मां' । दूसरी ये ध्वनियाँ होती हैं जो स्वरों के साथ मधेनी मधेनी, पत्रको बलदा कहते हैं ।

जैसे—'जागो' ये चार ध्वनियाँ हैं—'जू आ ग् ओ' इन में से ज् अ के साथ और ग् ओ के साथ योला गया है। यदि आ, ओ को छोड़ कर थोड़े, तो उच्चारण होगा ज ग। ये फिर चार ध्वानियाँ हो गईं—जू अ ग् अ। अ यलात् अन्त में योला गया। क्योंकि व्यञ्जन का अपना निज रूप इतना छोटा होता है कि वह एक पूरा उच्चारण नहीं बनाता। पर हर एक स्वर एक पूरा उच्चारण होता है।

३—अक्षर एक पूरा उच्चारण होता है। स्वर अकेला भी और अपने साथ गूँले जाने वाले व्यञ्जन वा व्यञ्जनों समेत भी एक अक्षर होता है। आओ जाओ, जागो, त्यागो, चारों पद दो दो धार के उच्चारण हैं—आ ओ, जा ओ, जा गो, त्या गो। सो चारों पद दो दो अक्षर के हैं। पर ध्वनियाँ क्रमशः पहले में दो आ ओ, दूसरे में तीन—जू आ ओ, तीसरे में चार जू आ ग् ओ, चौथे में पाँच—जू अ ग् ओ। सोराश यह कि हिन्दी में स्वर १८ हैं—अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ। ये ११ अक्षर हैं। जैसे अष, आज, इस, ईश, उस, उन, ऋषि, एक, ऐसा, औस, और इन सब में आदि स्वर एक अलग अक्षर है और स्वर से पूर्व एक या अनेक व्यञ्जन हों तो भी उन समेत ये एक एक ही अक्षर होते हैं। जैसे 'क, का, कि, की, कुं, कू, कृ, के, कै, फो, फौ' ये भी एक एक अक्षर हैं। 'मुक्त, मुक्ति, लक्ष्मी' इन में क्त, क्ति लक्ष्मी भी एक एक अक्षर हैं। अन्त में यदि व्यञ्जन हो तो वह अलग नहीं गिना जाता अपितु पूर्व

स्वर का बद्ध ही हो जाता है। सो 'ओम्' एक अक्षर है।

गुरु लघु

गुरु यहा या मारी; लघु छोटा या हल्का। (क) ह्रस्व (छोटे) अक्षर लघु होते हैं। सो अष, इम्, उस्, ऋषि में आदि के अ, इ, उ, ऋ, और कष, किस, कुल, कृति में आदि के क, कि, कु, कृ, तथा क्रम, क्रिमि, धृति, स्मृति में आदि के क, क्रि, धु, स्मृ लघु हैं। (ख) दीर्घ अक्षर सब गुरु होते हैं। सो 'आज, ईश, ऊन, पफ, पेश्वर्य, भोस, और' में आदि के आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, तथा काम, कीर कूल केश, कैसा, कोस, कौरव में आदि के का, की, कु, के, कै, को कौ और ग्लास थीरा, मूर होरा, द्योक में आदि के ग्ला, थी, मू, ने, दने गुरु हैं।

५—अपवाद (क) ह्रस्व लघु कहा है, पर जिस ह्रस्व के परे संयोग, अनुस्वार ञ या विसर्ग हो वह गुरु होता है। जैसे 'बुद्धा, पस, बुध' में 'कु, कं, बु' गुरु हैं, क्योंकि संयोग से पूर्व ह्रस्व पर जोर पड़ता है इस लिए वह गुरु हो जाता है और व का जो योन्ने में स्पष्ट गुरु प्रतीत होने ही हैं। (ख) पाद के अन्त का लघु भी, भाष्यरचना हो तो, गुरु पदा और गिना जाना है। जैसे—दीला मुन्दारी मति दि विचित्र।

(मानुष्यि)

६ अनुस्वार वाले लघु गुरु माने जाते हैं, पर अम्बुषिम्बु वाले लघु लघु हैं—

यह इन्द्रधजा वृत्त का एक चरण है। इसके अन्त में दो गुरु होने चाहियें। यहाँ अन्तिम दो अक्षरों में चि से परे न सयोग है, इस लिए 'चि' गुरु है, पर 'त्र' लघु है। इस पादान्त लघु को गुरु माना और पढा जायगा क्योंकि यहाँ गुरु वर्ण आवश्यक है।

(ग) सयोग में पूर्ण के ह्रस्व पर यदि जोर न पड़े तो वह लघु ही माना जाता है। जैसे—

'लीला तुम्हारी अति ही विचित्र'।

यहाँ तुम्हारी के तु को सयोग से पूर्व होने पर भी लघु माना गया, क्योंकि यहाँ तुम्हारी 'तुमारी' सा पढा जाता है, और तु पर जोर नहीं पडता। स्मरण रहे कि न्द, म्द से पूर्व लघु प्रायः ह्रस्वका पढा जाता है।

सादर कहहिँ सुनहिँ शुध ताहीं।

यह चौपाई का एक चरण है। इसकी मात्राएँ १६ होनी चाहियें। अथ यदि हिँ, हिँ को गुरु माने, तो मात्राएँ १८ हो जाती है। अनुस्वार एक अलग ध्वनि है जो स्वर के उच्चारण के पीछे नासिका में उत्पन्न होती है, पर चन्द्रविन्दु कोई ध्वनि (वर्ण) नहीं। किन्तु स्वर दो प्रकार से घोले जाते हैं एक अकेले मुख से, दूसरे नासिका की सहायता से। इन दूसरों को अनुनासिक कहते हैं और चन्द्रविन्दु इस बात का चिह्न होता है कि यह स्वर अनुनासिक (नाक की सहायता से) घोला गया है।

गुरु-लघु-चिह्न

६—गुरु का चिह्न लहरदार रेखा 'S' और लघु का चिह्न खड़ी उधी '।' होता है। जैसे S । का अर्थ है पहला गुरु, दूसरा लघु। इसके उदाहरण होंगे—राम, विष्णु, फंस, बुद्ध इत्यादि। लक्षणों में गुरु के लिए 'ग' और लघु के लिए 'ल' बोध जाता है।

मात्रा

७—छन्दों में लघु की एक मात्रा और गुरु की दो मात्राएँ मानी जाती हैं। उदाहरण—हर' दो लघु=दो मात्राएँ। 'दीर' पहला गुरु दूसरा लघु=तीन मात्राएँ। 'हीरा' दोनों गुरु=चार मात्राएँ। 'हीरादेवी' चार गुरु=आठ मात्राएँ। मात्रिक छन्दों में इन्हीं प्रकार गुरु की दो और लघु की एक मात्रा गिन कर मात्राओं की गिनती पूरी की जाती है। जैसे—

। । । । । S । । S । S ।

तु म अ म ल भान्त भनादि द्य' में १६ मात्राएँ हुईं।

गण

८—अक्षर-छन्दों में गुरु लघु के स्थान नियत होने हैं। अक्षर यदि एक एक अक्षर करके गुरु लघु के स्थान बन गए, तो लक्षण बगैर नहीं रह सके। शब्द भूट जाया करेंगे। इस का उपाय छन्दशास्त्रियों ने यह सोचा है कि तीन तीन अक्षरों का एक एक गण मान लिया है। यह वे तीनों अक्षर तीन

गुरु भी हो सकते हैं, तीन लघु भी हो सकते हैं, एक गुरु दो लघु भी हो सकते हैं इत्यादि भेद से उनके ये आठ भेद हो सकते हैं । १ सर्वगुरु ५५५, २ सर्वलघु ॥॥, ३ आदिगुरु ५।।, ४ आदि लघु ।५५, ५ मध्यगुरु ।५।, ६ मध्यलघु ५।५, ७ अन्तगुरु ।।५, ८ अन्तलघु ५५।, अब और कोई भेद नहीं हो सकता । ये गिनती में आठ गण और तुलना में चार जोड़े बने हैं । सर्वगुरु और सर्वलघु का पहला जोड़ा, आदिगुरु और आदि लघु का दूसरा, मध्य-गुरु और मध्य-लघु का तीसरा, और अन्त-गुरु और अन्त-लघु का चौथा । इसी क्रम से इन आठ गणों के एक एक अक्षर के आठ नाम और दो दो मिलाकर चार जोड़े नाम रक्ने हैं—

म न भ य ज र स त

५५५, ॥॥, ५।।, ।५५, ।५।, ५।५, ॥५, ५५।

मन भय जर सत

हर एक अक्षर के आगे 'गण' लगाने से भगण, नगण, भगण, यगण, जगण, रगण, सगण, तगण ये आठ गण बने ।

चार जोड़े (मन भय जर सत) और यह क्रम याद रखना चाहिये ।

पहला जोड़ा	मन	सर्वगुरु	सर्वलघु
		५५५	॥॥
दूसरा जोड़ा	भय	आदिगुरु	आदिलघु
		५।।	।५५

तीसरा जोडा	जर	मध्यगुह	मध्यलघु
		151	515
चौथा जोडा	सत	अन्तगुह	अन्तलघु
		115	551

अथवा यह दोहा * याद कर लेना चाहिए—

आदि मध्य अक्षरान में, य र त सदा लघु मान ।

क्रम में होते म ज न गुह म न गुह लघु प्रथ जान ॥

अथवा इस सूत्र को याद रखना चाहिए—

यमावाराजमानसलग

इस में पहले आठ अक्षर गणों के हैं । अन्तिम दो (ल ग)

लघु गुह के हैं । सब के लक्षण भी इसी में घट जायें, इसके लिए मा ता रा भा दीर्घ और म सानुस्यार पदा है । जिस गण का रूप जानना हो, उसके प्रतिनिधि अक्षर के भागे अगल दो अक्षर मिला देने से उसका रूप पता जाता है । जैसे यगण की पहचान के लिए य में अगले दो अक्षर मिलाए तो 'यमाता' हुआ । इस में आदि लघु और अन्त में दो गुह हैं । यही यगण का रूप 155 है । मगण की पहचान के लिए 'मावारा' दिया । ये तीनों गुह हैं । यही मगण का लक्षण है । इस सूत्र के क्रम में आठवें मगण के लिए अगले पदा, तो आदि में दो लघु, अन्त में गुह हुआ, यही सगण का लक्षण 55 है । अन्तिम दो अक्षरों में ल लघु का ग

* यह दोहा इस श्लोक का अनुवाद है ।

अदिमध्यमगुहसु वारो यानि अक्षरान् ।

अक्षरादीर्घ दीर्घान् यानि लघुस्यलघुः ॥

गुरु का वाचक है ।

सो छन्दों के लक्षणों में जिस छन्द के अक्षर तीन पर पूरे विभक्त हो जाते हैं—जैसे ३, ६, ९, १२ इत्यादि, उनके लिए उसके रूप के अनुसार गण-अक्षर थोड़े जाने हैं । यदि तीन पर विभक्त होकर एक अक्षर बचे, तो उसके रूपानुसार 'ग' वा 'ल' थोड़ा जाता है । ग=गुरु, ल=लघु । यदि दो बचें, तो उनके रूपानुसार ग ग = १ १ ल ल=॥, ग ल=१, ल ग=१ थोड़े जाने हैं । जो लक्षणों में, मन भय जर सत गल, ये दस अक्षर बतें जाते हैं । जैसे कि इस दोहे में कहा है—

मय रस तज मन गल सहित, दश अक्षर इन सोहि ।

सर्गशास्त्र ध्यापित लगौ, विश्व विष्णु सों ज्योहि ॥

(भानु कवि)

साम्प्रदायिक मर्यादाएँ

६—छन्द शास्त्रियों ने गणों के अलग अलग फल माने हैं । जिनके फल शुभ हैं वे गण शुभ और जिनके फल अशुभ हैं वे अशुभ माने जाते हैं । अशुभों को छन्द के आदि में नहीं रचते ।

नीचे दो प्रमाण दिये जाते हैं । दो दोहे और एक गीतिका दोनों में पहले गण का नाम, फिर उसका देवता, पीछे फल बतलाया है । दोहे वा गीतिका में से कोई एक कण्ठस्थ कर लेना चाहिये ।

(१) मगण भूमि लक्ष्मी य जल पावे आयु विशेष ।

र पावक ताफल जलन, सगण वायु परदेश ॥

तगण व्योम ही शून्य फल, जगण मालु रुज होय ।
नगण स्वर्ग सुप्रमद, भ राशि, देत यशहि ही सोय ॥

- (२) मगण पृथ्वी तासफल थी, यगण जल भायुमद ।
रगण पायक दाह ताफल, सगण धायु विदेशद ॥
तगण व्योम तु शून्य फल युत, जगण आदिन रुजफल ।
नगण स्वर्ग सदा सुप्रमद, भ राशि देये यश फल ॥
गणों के देवता, फल और शुभा शुभ का स्पष्टीकरण
निम्न सारिणी से जानो ।

गण	रूप	उदाहरण	देवता	फल	शुभ मशुभ
१ मगण	५ ५ ५	कौशल्या	पृथ्वी	स्वर्ग	शुभ
२ मगण	॥ ॥	भरम	स्वर्ग	सुप्र	"
३ मगण	५ ॥ ॥	रुद्रमण	चन्द्र	यश	"
४ यगण	॥ ५ ५	सुमित्रा	जल	धायु	"
५ जगण	॥ ५ ॥	महेन्द्र	सूर्य	रोग	मशुभ
६ रगण	५ ॥ ५	तिर्नन्दा	अग्नि	दाह	"
७ सगण	॥ ॥ ५	विमला	धायु	विदेश	"
८ तगण	५ ५ ॥	भाषाता	भाषाता	शून्य	"

शुभाशुभ अक्षर

१०—स्वर सभी शुभ माने जाते हैं ।

ज्येष्ठों में ये १४ शुभ हैं—

क ख ग घ ङ च छ ज झ ण ट ठ ड ढ ण न य र ल व

और ये १९ मशुभ हैं—

ह ः ऌ ऍ ऎ ए ऐ ऑ ऒ ओ औ क ख ङ ञ ण त थ द ध ण न य र ल व

श ष स ह ।

अशुभ अक्षरों में भी ह्र म र प ह, इन पांच अक्षरों को अधिक हानिकर माना है। अशुभ गणों और अशुभ अक्षरों को छन्द के आरम्भ में नहीं रखते। पर देयता या मङ्गल-वाची शब्दों के प्रयोग में यह दोष नहीं रहता और अशुभ अक्षर दीर्घ हो, तो भी दुष्ट नहीं माना जाता। जैसे पहला अक्षर ह्र दूषित है, पर ह्रा दूषित नहीं होता। यदि किसी वर्ण वृत्त में लक्षण के अनुसार आदि में अशुभ गण आता ही हो तो वह दुष्ट नहीं माना जाता।

मात्रिकगण

११—प्राचीन छन्द लक्षणों में मात्रिकछन्दों के पांच गण 'ट ठ ड ढ ण' मान कर लक्षणों में उनको वर्ता है। ६ मात्राओं के लिए ट, पांच के लिए ठ, चार के लिए ड, तीन के लिए ढ, दो के लिए ण, पर मात्रा फल ये नहीं बने जाते। मात्राओं की गिनती ही कह दी जाती है।

गति-यति

१२—(क) हर एक छन्द की एक चाल होती है, उमे गति कहते हैं। जैसे चौबोला के एक चरण में १५ मात्राएँ होती हैं और अन्त में लघु गुरु होते हैं। सो यदि हम यह पाठ पढ़ें—
सदा उन्नति की गैल गहो।

समाज में नेता बन रहो ॥

तो यह चौबोला छन्द नहीं कहलाएगा। इसी को जब

वेसा पढ़ें—

गल सदा उप्रति की गशो ।

नेता यन समाज में रहो ॥

तो इस में चौबीस की गति धा जाती है । गति को जान पहचानने हैं और यह पहचान धम्यामयदा होती है ।

(म) यति विराम मयदा टहगाय को कहते हैं । पाद के गत में तो सभी छन्दों के यति होती है, पर यद्दे छन्दों में एक ही पाद में दो या तीन यतिया होती हैं । यति के अनुसार विराम करके सोलने से छ द अधिक सुहायने बन जाते हैं । देसो शिगरिणी और मन्दाप्रान्ता के उदाहरण (पृष्ठ ७) ।

चरण

१३—(क) छन्द की एक पूरी चाल को चरण पाद या पद कहते हैं । चरण प्राय चार होने हैं । जैसे—

(१) ७ मात्राओं का सुगति छन्द ।

दिय दिय बहो, यदि सुख, बहो ।

जो सुमति है तो सुगति है ॥

'मानुषवि'

(२) २६ मात्राओं का गीतिका छन्द ।

धर्म के भग में अधर्मा से बर्षा करता नहीं ।

धेन कर बहना कुमरग न धर्म धरना नहीं ॥

सुष्ट भाषों में अपान न भागना नरना नहीं ।

बोधवर्षक देण निखने में बर्षा करता नहीं ॥

'भापुराम शूर' ।

‘प्राय’ कहने का अभिप्राय यह है कि चार चरणों का नियम सार्वत्रिक नहीं। कुण्डलिया छन्द छह चरण का होता है। लोकोक्तिया कई एक एक चरण की प्रसिद्ध हैं।

(ख) दोहा, सोरठा आदि जो छन्द दो दो पक्तियों में लिखे जाते हैं, उनकी हर एक पक्ति को दल कहते हैं।

अन्यानुमास वा तुरु

१४—पादान्त के अक्षरों के मेल को तुक कहते हैं। तुक के बिना भी छन्द प्यारे लगते हैं। वाल्मीकि, कालिदास आदि सस्कृत के प्रसिद्ध कवियों ने तुक का मिलान नहीं किया, तो भी उनके छन्द बड़े सरस हैं। कारण यह कि एक तो वे छन्द की गति-यति को पूरे तोल में लाते हैं, दूसरे उनकी कविता परमपूर्ण होती है। पर यह भी भूलना नहीं चाहिए कि तुक के मेल में रस बढ़ ही जाता है। सस्कृत के कवियों ने जहाँ जहाँ अन्यानुमास (तुक) यतां है, वहाँ माधुर्य बढ़ ही गया है। गीत में तो तुरु बहुत जरूरी मानी गई है। सस्कृत में अपटमजगी और गीतगोविन्द ये दो प्रसिद्ध गीत-ग्रन्थ हैं। इन में तुक पर सर्वत्र पूरा ध्यान दिया है। हिन्दी कविता में आरम्भ ही से तुक के मिलान पर पूरा ध्यान रक्खा है, अतः एव हिन्दी में बिन तुक के छन्द नाममात्र हैं, पर हैं सही। सो एक भेद तो बिन तुक के छन्दों का हुआ, दूसरा तुरु वालों का। तुक वालों के फिर पाच भेद हैं। (१) चारों चरणों में तुक का मेल (२) पहले दूसरे, तीसरे चौथे और यदि छ' चरण हों तो पाचवें छठे चरणों की तुकों का मेल (३) सम चरण

(२, ४, ६) की तुकों का मेल (४) विषम धरणों की तुक का मेल । (५) दो श्लोकों की तुक का मेल । इन सब के उदाहरण क्रमशः नीचे दिए जाते हैं ।

(क) निम्नलिखित दोनों तुक-हीन पद्य क्रमशः द्रुतविलम्बित और मन्दाप्रान्ता वृत्तों में हैं ।

(१) किम्बतपोवट से किस षाल में ।

सच बना मुरली फलनादिनी ॥

भयनि में तुल को इतनी मिली ।

मधुरता, मृदुता, मादारिना ॥

(२) आ के षागा, यदि सदन में, बैठ जाता कहीं भी ।

तो तन्यगी, उस मदन की, यों उन्ने धी सुनाती ॥

जो भाते हों, कुँवर उठबे, काफ मो बैठ जा नू ।

में धान का, प्रति दिन तुमे, मूख धी मान दूगी ॥

(अयोप्यासिह तपाप्याप)

(ख) चारों धरणों में समान तुक वाले ।

दिकपाल छन्द

पीछे कदम जग भी एक से न गान्ते हैं ।

रघूमूर्ति में सुनीसे निरुत्तर दान्ते हैं ॥

दीपक रघुनाथना का, सब पीर दाहने है ।

नव से कहीं भौंटेरा, घर में निवाणते हैं ॥

(रागनेरेश त्रिपाठी)

गोला उन्द

शशि विन सूी रैन, शान विन हिरदे सुनो ।
 कुल सुनो विन पुत्र, पत्र विनु तरुवर सुनो ।
 गज सुनो इक दन्त, और वन पुद्गुपयिहूनो ।
 विप्र सूा विन वेद, ललित विन शायर सुनो ।

इस में तुक 'ऊनो' है । (घैताल)

(ग) प्रमश दो दो पदों की तुक ।

चौपाई

(१) शठ सुधरहिँ सत्सङ्गति पाई ।

पारस परसि कुधातु सुहाई ॥

विधि वश सुजन कुसङ्गनि परहिँ ।

फणिमणिसम निजगुण अनुसरहिँ ॥

(तुलसीदास)

(२) रहिये लटपट काटि दिन, घर घामे मा सोय ।

छाँह न वा की बैठिये, जो तरु पतरो होय ॥

जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा दैहै ।

जा दिन बहे धयारि, टूटि तब जर से जैहै ॥

कह गिरिधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये ।

पत्ता सब झरि जाय, तब छाँहिँ मा रहिये ।

(गिरिधर कविराय)

(घ) सम चरणों (२, ४, ६) की तुक—

त्रिपाता छन्द

बनोखी बात है तेरे निरादे प्रेम गन्धन में ।
 उलझ कर भक्त उलझन में जगन को पार करते हैं ॥
 न होती भाह तो मरी दया का क्या पता होता ।
 उम्मी से दीन जन दिन रात हाहाकार करते हैं ॥
 हमें तू मीचने के मामुमों से पंथ जीवन का ।
 जगन के ताप का हम तो यही उपचार करने हैं ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

सोरठा

(ठ) विषम चरणों की तुक—

रहिमन, मोहि न सुदाय, अमीं पियावन मान दिन ।
 बर बिब देय पुगय, मान सहित मरियो भगो ॥

(रहीम)

(च) दो दलों की तुक का मेल—

दोहा

बनता खालो खीर जो, करना गौरव-जान ।
 या बर धारो नेरनी, या विवराठ कृपाय ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

चरणालों की तुकों के अतिरिक्त चरण के योग्य की
 दक्षिणों में भी वहाँ तुक पाई जाती है । जैसे—

चवर्षया

माता, पुत्रि खोटी, मां मन्त्रि खोटी, मजदू लार यह क्या ।

कीजै शिशुलीला, अतिप्रियरीला, यह सुख परम अनूपा ॥
 सुनि वचन सुजाना, रोदा टाना, हुइ पाठक सुररूपा ।
 यह चरित ज गागहिँ, हरिपद पावहिँ, तेन परहिँ मघरूपा ॥
 (तुलसीदास)

छन्दों के भेद

छन्दों के चार मुख्य भेद हैं—मात्रिक, अक्षर, उभय और मुक्त व स्वच्छन्द ।

(क) मात्रिक छन्दों में मात्राओं का तोल होता है । इसके अग्रान्तर भेद तीन हैं—सम, अर्धसम और विषम । जिनके चारों चरणों में एक ही लक्षण घटे, वे सम, जिनके पहले चरण का लक्षण तीसरे के साथ और दूसरे का चौथे के साथ मिले, वे अर्धसम, और इन दोनों से भिन्न विषम कहलाते हैं । मात्रिक का दूसरा नाम जाति है ।

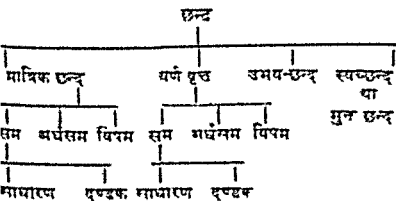
(ख) अक्षर छन्दों में अक्षरों का तोल होता है । इनके भी मात्रिकवत् तीन अग्रान्तर भेद होते हैं—सम, अर्धसम और विषम । अक्षर छन्दों का दूसरा नाम वर्णवृत्त है । मात्रिक छन्द और वर्णवृत्त इन त्रिमिन्न शब्दों के प्रयोग में दोनों में भेद अधिक स्पष्ट रहता है, इसलिए अक्षर छन्द के स्थान पर प्रायः वर्णवृत्त प्रयुक्त होता है ।

मात्रिक सम और घण सम छन्दों के दो दो अग्रान्तर भेद हैं—साधारण और दण्डक । मात्रिक छन्दों में ३२ मात्राओं तक साधारण, उसके आगे दण्डक, और वर्णवृत्तों में २६ वर्णों तक साधारण और उसके आगे दण्डक कहे जाते हैं ।

(ग) उभय छन्दों में मात्रा नियम और वर्ण-संख्या दोनों का प्थात एकत्रा जाता है ।

(घ) स्यञ्छन्द छन्दों में इष्टि बेधल ल्य पर रहती है, और कोई बन्धन नहीं होता ।

नीचे के छन्दो वृक्ष में इन भेदों का स्पष्टीकरण है ।



मात्रिक छन्द आरम्भ में एक ही मात्रा से हो जाते हैं, जैसे- एकमात्रिक क, ग, घ । द्विमात्रिक-अप मयः । त्रय, क्य । अर्धमा-भा, भा । त्रा, ट्रा । इसी प्रकार वर्णवृत्त भी एक वर्ण से आरम्भ होते हैं । पर ऐसे छन्द छान्दोग्य के हैं । इन में कोई बन्धन पूरा नहीं होता । बलव्य कहने के लिए मात्रिक छन्द छद्द मात्राओं से और वर्णवृत्त प्रायः छद्द वर्णों से आरम्भ होते हैं । छद्द मात्राओं वाले पादस का उदाहरण—राग त्रेय । उभय वृत्त । वन विभीत । अमर्षित ॥ और छद्द वर्णों का मित्रका— इय जीवन में, पहलै वन में ॥ त्रय संयय है । त्रय वया अय है ॥

(रामभद्रा विष्ठी)

अथ छन्दों के प्रत्येक प्रकार के उदाहरण दिए जाते हैं

- (१) मात्रिक समछन्द—२८ मात्राओं का विधाता छन्द
मलाई को न भूलेंगे सुशिक्षा को न छोड़ेंगे ।
हठीले प्राण खो देंगे, प्रतिष्ठा को न तोड़ेंगे ॥
पढ़ेंगे प्रेम क पौधे, दया के फूल फूलेंगे ।
भरे आनन्द से चारों, फलों के झाड़ झूटेंगे ॥

(नाथूराम शर्कर)

- (२) मात्रिक अर्धसम दोहा । चार चरणों में क्रमशः,
मात्राएँ १३, ११ । १३, ११ ।

प्रातर्हि उठिके नित्य निन करिये प्रभु को ध्यान ।
जात जग में होहि सुख, अरु उपजै सत ज्ञान ॥

- (३) मात्रिक त्रिपम १५२ मात्राओं का छापय छन्द ।

जहा स्वतन्त्र विचार न बदलें, मन में मुख में ।
जहाँ न बाधक बनें स्वतन्त्रों के सुख में ॥
सब को जहा समान निजोन्नति का अवसर हो ।
शान्तिदायिनी निशा हर्षसूचक वासर हो ॥

सब भाँति सुशासित हों जहा, समता के सुप्रकार निय
बस, उती स्वतन्त्र स्वदेश में, जाग है जगदीश हम ।

(रामनरेश त्रिपाठी)

- (४) षण्ण समवृत्त-भुजगी (य य य ल ग वर्ण ११)

समुत्थान का ध्यान ही मूल है ।

इसे भूठ जाना बड़ी भूल है ॥

सुशिक्षा जहा है यहीं सिद्धि है ।

जहा निरि हागी वही वृद्धि है ॥

(मैथिली शरण गुप्त)

(५) यणार्धस्वम—पुष्पिमात्रा—(प्रथम चरण न न र य, स्वम
चरण न ज ज र ग)

फिरि फिरि छमि नै कहे नयेली ।

त्रिधि यह फाँन प्रकार का चमेगी ॥

रैग धरमि फँल-पाँगुरा क ।

शुयति नु पुष्पित अग भाँगुरी क ॥

(सिन्धारीदास)

(६) वर्ण-प्रियम—मौलभक्त—(प्रथम चरण ख ज स र; द्वितीय
न स जग, चतुर्थ स ज स ज ग)

सप न्यागिये भसन बाम । शरण गहिये सदा हरी ।

सये सुल भय जाये टरी । मजिये अहा निनि हरी हरी हरी

(भानुषरि)

उभय-उन्द

(मात्रिक हरिगीतिका में वर्ण-भंग्या समान)

कवि, काल, बालामल, कृपाकर, कनु, कल्याण-कन्द है ।

शुषभाम, सत्य, सुषर्ष, सच्छिन्द, सयंश्रिय सख्युन्द है ॥

मगद्वन भानुक भक्त बल्लभ, मू, विमू, सुषनेता है ।

करनार, मारक है तुदी यह सेद का उपदेश है ॥

(माधुसूदन शकुन्त)

मुक्त छन्द

मर देते हो—

घार-घार प्रिय, करुणा की किरणों से,
क्षुब्ध हृदय को पुलकित कर देते हो ।

मेर अन्तर में आते हो देव निरन्तर,
कर जाते हो व्यथा भार लघु

घार-घार कर-कण्ठ धड़ा कर,
अन्धकार में मेरा रोदन,

सिक्त धरा के अञ्जल को,

करता है क्षण क्षण—

कुसुम-कपोलों पर वे लोल शिशिर कण;

तुम किरणों से अश्रु पोंछ लेते हो ।

नव प्रभात जीवन में मर देते हो ॥

(सूर्यफान्त त्रिपाठी 'निराला')

द्वितीय अध्याय

मात्रिक-सम-छन्द (साधारण)

जिन मात्रिक छन्दों के चारों चरणों में मात्रा नियम समान हो, वे मात्रिक सम-छन्द होते हैं।

(१) तोमर

(क) मुण में मधुर उच्चार । षर में षदा उपचार ॥
एतन् हृदय में मीनि । हे सुजन की यह गीति ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

तोमर छन्द के प्रत्येक चरण में १२ मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पाद के अन्तिम दो वर्ण क्रमशः गुरु, ह्रास्व होते हैं। जैसे—

(ख) बहु मीनि वृद्धि सुखाय । षर जोरि के पटि पाय ॥
हीनि के षरों इधि-निम्रे । मय देहु राज पधिन्न ॥

(ग) सुनु दान मानम हीम । रघुदेव के मजसम ॥
एत मीनि जो भनि मेहु । यक यस्तु मांगति देहु ॥

- (घ) मुनि ज्ञान मानस हस । जप जोग जाग प्रशस ॥
जग मात्र हे दुःख जाट । सुख है फहाँ इहि काल ॥
- (ङ) तहाँ राज है दुःखमूल । सब पाप को अनुकूल ॥
अर ताहि लै ऋषिराय । कहि कीन नरकहि जाय ॥
- (च) चहुँ माग वाग तडाग । अथ देखिये बड माग ॥
फल फूल साँ सयुक । अरियोँ रमे जन मुक्त ॥
- (छ) मुनि रामचन्द्र कुमार । धनु मानिये यहि धार ॥
पुनि बेगि ताहि चढाव । यश लोक लोक बढाव ॥
- (ज) सह भरत लक्ष्मण राम । चहुँ किये आनि प्रणाम ॥
भृगुनन्द आशिष दीन । रण होहु अजय प्रधीन ।
- (झ) सुनु राम शील समुद्र । तब बधु है अति क्षुद्र ॥
मम बाढगानल कोप । अथ कियो चाहत लोप ॥
- (ञ) तुम क्यों चलो घन आनु । जिन शीश राजत राजु ॥
जिय जानिये पतिदेव । करि सर्व भातिन सेव ॥

(केशवदास)

२ उलाला (अन्य नाम चन्द्रमणि)

उलाला छन्द के प्रत्येक पाद में १३ मात्राएँ होती हैं ।

१ उलाला नामक एक मात्रिक अर्धसम छन्द और भी है। नाम-सान्य के कारण छात्र प्रायः गड़बड़ में पड जाते हैं। इस के तो सब चरणों में १३, १३ मात्राएँ होती हैं, परन्तु उस के विषम चरणों में १५, १५ और सम में १३, १३। इस में उस में यही अन्तर है।

पाद के अन्तिम वर्णों में गुरु लघु का कोई विशेष नियम नहीं होता । हां, ११ वीं मात्रा अवश्य लघु होती है । जैसे—

(क) उरना होगा ईश मे, और दुर्गा की हाय मे ॥

मिडता होगा टोर पर, राम गनीति अग्याय मे ॥

(ख) पहली मजिद मौल दे, प्रेम पय है दूर का ।

सुनता हूँ मन था यही, सुली पर मन्मूर का ॥

(ग) मत-मिलिन्द मुनि पुन्द के, मजल मचल ईम पर गये ॥

प्राण गये तो इमी पर, न्योछाकर हा पर गये ॥

(घ) जीवन में कम प्रेम ही, जिन का प्राणागर हो ॥

खय गले का हार हो, इना उम पर प्यार हो ॥

(ङ) होता मन व्याकुल कहीं, इस मयजनित शिवाय मे ॥

धरने भावह पर अटल, रहना बस प्रहाय मे ॥

(च) दृष्ट में भी गुण शान्ति का, नर अनुभव तो प्रायगा ॥

प्रेम-सन्धि मे देव का, सारा मउ धा प्रायगा ।

(प० गणप्रसाद सुर)

३. मारी

मारी छन्द के प्रत्येक पाद में १४ मात्राएँ होती हैं । हर एक चरण के अन्त में प्रायः मारा (१ १ १) या यगा (१ १ १) का होता आवश्यक है । जैसे—

(क) भावर्ष-भाव में भूले,

अनुगत-धन के मारी ।

क्यों ध्यान-मग्न तुम बैठे,
मर कर फूलों से ढाली ॥

- (ख) सुन्दर फूलों की फुहियाँ,
झर-झर तुम पर झरती हैं।
नत-मस्तक वृक्ष खड़े हैं,
पत्तिया पवन करती हैं ॥

(गुलाबरक्त घाजपेयी)

- (ग) क्यों छलक रहा दुख मेरा,
ऊषा की मृदु पलकों में ।
हा ! उलझ रहा स्रुप मेरा,
सध्या की घन अलकों में ॥

- (घ) उच्छ्वास और आसु में,
विश्राम यथा सोता है ।
रोई भाखों में निद्रा,
बन कर सपना होता है ॥

- (ङ) सन्ध्या की मिलन प्रतीक्षा,
फह चलती कुछ मनमानी ।
ऊषा की रक्त निराशा,
कर देती अन्त कहानी ॥

- (च) फिर विश्व मागता होवे,
ले नभ की खाली प्याली ।
तुम से कुछ मधु की बूँदें,

लौटा लेने को लाली ॥

(जयशङ्कर प्रसाद)

- (७) सब घर घर की प्रजनारी ।
दधि गोरम पेचनहारो ॥
मिल नृत्य सब मन कीन्हा ।
जमुना-सट मारग लीन्हा ॥

(प्रज्यामी दाम)

४. हास्ति

हास्ति छन्द के हर एक चरण में १५ मात्राएँ होती हैं ।
अग्निम धर्म गुरु होता है । इस के पादों में तीन खीपोंके के
बनकर एक गुरु आता है । जैसे—

(क) “पापन-कारन जीया का,
गुह हो याम निला पन का ।
जाता हूँ मैं धर्मी यहाँ,
राज्य बरोंग भरत यहाँ ॥”

(ख) गोद बड़ाऊ पूँछट की
बिबली बल्लोपम पट की,
पाँखि की थी पिपु-मुस की,
गीमा थी सुवमा गुण की ।

(ग) माध-गुर्दान का मदन बहा ।
लाल बमल-या दहन बहा ।

पर छंद, छन्द बहा ॥

कुद-कली-से रदनं बहां ।

(मैथिली शरण गुप्त)

जहां भव चरणों में तीन तीन चौकल नहीं होते, वहाँ इसी छन्द को भाग्य कहते हैं । जैसे—

मानव

(४) सीता ने सोचा मन में—

“स्वर्ग बनेगा अब वन में !

धर्मचारिणी हूँगी मैं,

धनविहारणी हूँगी मैं ॥”

(५) साँप सिद्धाती थी अटक,

मधुप पालती थी पदकें,

और कपोलों की झलनें,

उठनी थी छवि की छलनें ।

(६) “मँझली माँ ! तू मरी न क्यों ?

लोक-लाज से डरी न क्यों ?”

लक्ष्मण ने निःश्वास लिया,

माँ के जान सु-वास लिया !

(मैथिली शरण गुप्त)

५. मधुमालती

१ ऊपर १४, १५ मात्राओं के तीन छन्द दिये गये हैं—
सखी, हाफलि और मधुमालती । एक तो छीनों की 'सखि
पूयक् पूयक् है और दूसरे सखी के अन्त में मगथा (३५५)

मधुमाउनी छन्द के प्रत्येक पाद में १४ मात्राएँ होती हैं।
यदि (विराम) चान, सान मात्राओं पर होती है। प्रत्येक पाद
के अन्त में रगण (५ । ५) होता है। जैसे—

(क) हे कार्य पू, ण न एक भी
किन्स भानि सों, जाये अर्मा।
क्या नीद अ, कड़ी आयगी,
यह रत्न यों, ही नायगी ॥

(ख) सन्ध्या समय ऐसे यकें,
हम नीद गहरी ले सकें,
जिन में कि हम, फिर नर चगे,
मोम्माह या यों में लगे ॥

(विद्याराम शरण तुम)

साधारणतः पूरा शब्द के अन्त में ही गति आता है परन्तु
इन पादों में कहीं कहीं शब्दों के मध्य में ही गति पट जाती है।
अब तो यह है कि वर्तमान कवि अनि-विषयक विषयों की
विशेष परवा भी नहीं करते।

शब्द (१५६), इन्होंने के अन्त में एक गुण कर्ता
और मधुमाउनी के अन्त में एक मात्रा होता है। इन का एक
दुसरे में लड़ी मेह है।

१—इहाँ पर पाठ्य में शब्द का विषय कवि ने लिखित
कर दिया है।

६. चौबोला

चौबोला उन्द के प्रत्येक चरण में १५ मात्राए होती है।
अन्तिम दो वर्ण क्रमश लघु गुरु होते हैं। जैसे—

(क) मित्र सफल निज जीवन करो
हृदय नीच शुभ गुण-गण धरो।
गैल सदा उन्नति की गहो,
नेता बन समाज में रहो ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

७ चौपई (अन्यनाम—जयकारी)

चौपई के प्रत्येक पाद में १५ मात्राए होती हैं। हर एक
चरण के अन्तिम दो वर्ण क्रमश गुरु लघु होते हैं। जैसे—

(क) करके शिक्षा-कार्य समाप्त,
विद्यालय की पदवी प्राप्त
फिर तुम ग्रामों में कर वास,
ग्रामीणों का करो विकास ॥

(ख) हिन्दू युवक उठो तुम आज,
रखसो निज समाज की लाज।
हो तुम पर विभु की वर वृष्टि,
लगी तुम्हों पर धारा वृष्टि ॥

(ग) धर्मों में न पीटो लीक,
सौच समझ देखो तुम ठीक।
करो न भ्रमसमय का आलाप,

जो तुम को ही दूने न भाप ॥

(घ) भास-सघटा परो सयुक्ति,
दिन्दु तुम्ह मिलेगी मुक्ति ।
भाषेगी तुम में यह शक्ति,
जिस पर हो सप की अनुरक्ति ॥

(ङ) पावे सभी प्रसाध, प्रमोद,
सोये भारत मा की गोद ।
मिटे परस्पर के सन्देह,
उपत्रे शास्त्र-भाष सम्मद ॥

(च) क्या शासन क्या ग्याय विनाग,
क्या यूरप की भी यह भाग ।
जिस में जले जगत क पीर,
सिद्ध हुए हम वही भपीर ॥

(मिथिलीशरफ गान)

८. गुणाल (कच नाग-भुमिनिनी)

गुणाल के प्रत्येक पाद में १४ मात्राएँ होती हैं और अन्त में अक्षर । जैसे—

१. कपूर १२ १२ मात्राओं के बीच कच निव गद है—
कौराडा, कौराड कौर गुणाल । कौराडा के अन्त में कच, गुद,
कौराड के अन्त में गुद कच कौर गुणाल क अन्त में कच
(१४) होता है । अन्त के अतिरिक्त कच का अन्त में लगे
कच है ।

इस के आगे ? जिदा विगेष,
हुए दम्पनी फिर अतिमेघ ।
किन्तु जहाँ है मनोनियोग,
वहाँ कहीं का निरह प्रियोग ?

(मैथिली शरण गुप्त)

९ पादाकुलक

पादाकुलक क प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं ।
हर एक चरण म चार चार श्लोक होते हैं । जैसे—

(फ) वायस पालिय अति अनुरागा ।

होइ निरामिय कबहुँ कि कागा ॥

सत सहहिँ दुख परहिँन लागी ।

पर दुम्य इत असन्त अभागी ॥

(ख) सेवक सुख चह मान भियारी ।

व्यसनी धन सुभगति व्यभिचारी

लोभी जस चह चारु गुमानी ।

नम दुहिँ दूध चहत ये प्राणी ॥

(ग) सुमति कुमति सथ के उर रहहीं

नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥

सहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना

जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना

(घ) गिन सुख गिन मत होइ कि थी

परस कि होइ विहोन समीरा ।

एयनिडं विद्धि किं विन विम्व्यासा ।

पिन इति भजन वि भयभय नासा ॥

(तुलसीदास)

(८) शुभ सर शोभै गुनि मन लोभ ।

सरसिन पृत्ते अतिरस भूले ॥

जजन्वर शोभै यद् गग गोले ।

वरणि न आदि उर अदृशाही ॥

(केशवदास)

उपरोक्त पद्यों के प्रत्येक चरण में चार चार शब्द हैं ।
 प्रथम के लिए 'श' पद्य के प्रथम चरण की ही परीक्षा करते ।

क्षेपक = ५ १ १ = ५ मात्रा या वजा (चौबरा)

सुभ्र पद = १ १ १ १ = " " " "

मातृमि = ५ १ १ = " " "

वारी = ५ ५ = " " "

१०. पद्यवि

• पद्यवि शब्द, पादाङ्गुल्य का ही एक अर्थ है । इसके अर्थके
 पाद के अन्त में प्रायः अन्त होता है । जैसे—

(अ) आनन्द शब्द, अन्तानिधान,

है विश्वकोष का अन्तिमार्थ ।

यह हीम का अर्थ है अन्त,

अन्त हीम का अर्थ है अन्त-वन्त ।

(अन्तकोष विद्यापीठ)

- (ख) पर इन विहँगों में एक कीर ।
 या अग्रगण्य अति धीर वीर ॥
 तरु पर नितान्त रह कर स्वतन्त्र ।
 नित जपता था यह यही मन्त्र ॥
- (ग) "जब तक दें तन में प्राण शेष ।
 तब तरु न तजूँगा मे स्वदेश ॥
 तज अहमात्र का घृणित गर्व ।
 इस पर वारं सब कुछ समर्थ ॥"
- (घ) रथ को तज धर कर त्रिप्र-शेष ।
 शुक निकट पहुँच बोले सुरेश ॥
 'तू क्यों देता है यहा प्राण ।
 जा अन्य स्थल को शुक सुजान ॥"
- (ङ) "मै जन्मा था इस पर अयोध ।
 पाया इस ही पर सृष्टि-योध ॥
 इसने ही दे कर बल विशेष ।
 है मिथिलाया उडना सुरेश ॥
- (च) वे मृदुल मृदुल हैं याद डाल ।
 जिन पर बीता था बाल बाल ॥
 वे और युक्त वे छदन लाल ।
 कैसे भूलूँगा वे रसाल ॥
- (छ) छा कर जिन को मै शुको सग ।
 यौवन में करता राग रग ॥
 हैं याद मुझे वे दिन अतीत ।

- होती जब घरां घाम शीत ॥
 (ज) बह स्वयं वाहन कर मर्ये होश ।
 या मुझे बचाता है सुरेश ॥
 जब हुआ अचिन्त घरीं भाज ।
 जब मिते नित्य के गौण्य मात्र ॥
 (झ) तब छोड़ उमे जाना सुरदा ।
 है मानी दिन अपयश विशेष ॥
 इस को लजना छति निय बर्म ।
 इस पर भर मिटना दे स्वयमे ॥
 मैं इसे न त्यागू गुनामीर ।
 चाहतन त्यागे भगु अधीर ॥”

(गोविन्ददास)

११. चौपाई

चौपाई एक प्रत्येक चरण में १६ मात्राओं होती है। इसमें गुरु-ऋषु या गौण्यो का कोई नियम नहीं होता। चौपाई की

१ पादाङ्क और चौपाई छन्द की मति (बाल) विस्तृत एक की होती है। इस लिए इन का पर्यायन शब्द कहे जाते हैं। पर्यायन का मतलब यही है कि पादाङ्क के चरणों में बार बार चौकल चरण होते हैं और चौपाई में नहीं। ये दोनों छन्द परस्पर विरुद्ध भी कहे हैं। परन्तु १२। १४ चरणों चरणों में चौकल का नियम पूरा न हो कर १३ चरणों

रचना में इस बात का ध्यान अवश्य रहना है कि सम-बल के पीछे सम-बल आए। यहाँ काद प्रियम फल आ जाए, तो उनके अनन्तर प्रियम का रस पर समता फल ली जाती है। इस प्रकार पदों के अन्त में गुरु लघु (५ ।) कभी न होने चाहिए। जैसे—

(क) धिनु मनाय न काम नसाहीं ।

काम बहुत मुग्य सपनेहु ताहीं ॥

राम सजन यिन मिटहि कि कामा ।

थल विहीन तरु कथहुं कि जामा ॥

(ख) सुनु जननी मोर सुन बडभागी ।

जो पितु मान बचन अनुगामी ॥

ननय मातु पितु तोपन द्वारा ।

दुलम जननि सफल ससारा ॥

(ग) धन्य जाम सगनीतल तासू ।

पितहि प्रमोद चरित सुन जासू ॥

चारि पदारथ कर तल ताके ।

प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके ॥

(घ) तत्त प्रेम कर मम अरु तोरा ।

जानत प्रिय एक मन मोरा ॥

सो मन सदा रहत तोहि पाहीं ।

जानु प्रीतिरस पतनिहँ माहीं ॥

(ङ) धरन धर्म नहिँ आक्षम चारी ।

धृति-विरोध रत सब नर नारी ॥

छिज श्रुति वेगक भूपे मजासन ।
 षोड नहि माग विगम धनुमागत ॥

(घ) मारग मोह जाबहँ ओर माया ।
 पंडित सोइ जो गाल यजाया ॥
 मिष्यारन दन्म-रत जोई ।
 ताहँ सन्न काहि नप छोई ॥

(ङ) मोह सपान नो पर घा-हारी ।
 जो कर दन्म सो षड भाचारी ॥
 जो बह झूट मसखरी जाना ।
 बलि जुग सोइ सुखयन पराल ॥

(च) निराचार नो युग-पथ-न्यायी ।
 कलिजुग मोहपानी देरामी ॥
 जाके मथ भक्त जटा विमाष्टा ।
 सोइ तापन प्रसिद्ध कटिकाष्टा ॥

(मुसर्मादास)

१२ गृहार्ण

१—द्राम को रस जाने बन्ना ।

२—इतर १३, १४ भाग्यों के इन पाठ इन्हों का विरल
 दिग मग है- पराबुद्ध, पट्टि, चौबड़े २८११ । मंदिर में
 इसी पदमन को कर मथने है । यदि मथेक बार में पाठ
 कर चौबड़ों को कर पराबुद्ध है । यदि चौबड़ों का निरम
 और पदमन का निरम पूरा करण हो को कर

शृङ्गार छन्द के प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पाद के प्रारम्भ में त्रिकल और द्विकल (३+२ मात्राएँ) तथा अन्त में गुरु, लघु (५।) अवश्य आने चाहिए। जैसे—

(क) हरित घन कुसुमित है द्रुम-वृन्द;
 धरसता है मलयज मकरन्द।
 स्नेहमय सुधा दीप है चन्द;
 गेलता शिशु हो कर आनन्द ॥

(जयशङ्कर 'प्रसाद')

(ख) गूँजते ये रानी के फान,
 तीर-सी लगती थी वह तान—

पद्मरि समझना चाहिए, परन्तु वर्तमान कवि इसकी चाल (गति) को ही प्रधान मानते हैं और चौकल तथा जगण के नियमों की उपेक्षा भी कर देते हैं। यदि चौकल-नियम पूरा न हो और अन्त में गुरु, लघु न हों, तो वह चौपाई होगी। यदि चरणों के आदि में त्रिकल और द्विकल तथा अन्त में गुरु लघु हों तो उसे शृङ्गार समझना चाहिये।

छन्द पढ़ने वाले छात्रों को चाहिए कि वे छन्दों के सद्व्यकरणों को ऊँचे स्वर से बार बार पढ़ा करें। इससे विविध छन्दों की चाल उनके मस्तिष्क में स्वयं ही अविष्ट हो जायगी और समय पाकर वे ध्वनि-मात्र से ही बता सकेंगे कि अमुक पद्य किस छन्द में है।

भरत-से सुत पर भी सप्रेम ।

पुत्रया सक न उन्हें जो गेह ॥

(मिथिलीशरण सुत)

(ग) न रक्षता मौतों का आदान,

नहीं रक्षता फूलों का राज ।

कोविदा होनी मन्तरधात,

बला जाता प्यारा शत्रु-राज ॥

(घ) बिकसने, मुट्ठाने को फूल,

उदय होना छिपने की चन्द ।

शून्य होने को समने घेय,

बीच बहना होने को मन्द ॥

(महादेवी वमा)

१३. चन्द्र

चन्द्र चन्द्र के चारों चरणों में १३, १० मात्राएं होती हैं ।

इति १० तथा ३ मात्राओं पर होती हैं । जैसे—

(क) केर में डालने, हमें भो, ने ।

तो फिराये न क्यों, फिर चाँदु ॥

जो किमी अंश में, लगे गिर मो ।

किंग फिर अंश में, दिने अंशु ॥

(ख) जग जिन में दे जग बाने वे ।

(—कृष्ण पदा अन्तः ।

- (न) दिया रामु के पाँच पैरु गहो ।
 पितायाक सहायक मने दिन चहो ॥
 मज्जी राम मातृ के पद पौ ।
 दिया जिग दुधुम पौन के नंद को ॥

(श्री बन्दीराम)

१५. पीयूषर्ष

पीयूषर्ष ४ अक्षरक पाद में १६ मात्राएँ होती हैं। १० और १ मात्राओं पर यति होती है। चरणान्त में एषु, युष होते हैं। जैसे—

- (क) पद की है चार, जैसी पूर्तिपौ,
 टीक गिनी चार, माया-भूतिपौ ।
 अन्य द्वालय-त्राण-पुण्योक्त है,
 धर्म नगपद भूमि, भारत-यपे है ॥
- (ख) यदि दयामय दधि, सुखद सारक,
 इधर भी निज परद, पानि पसार दे,
 कात की पर वह-प्री सार दे,
 सोम-सरो मे नई जेकार दे ॥

(मेघिटीनारय शुभ)

उहाँ राम छन्द में यति-निधन और अन्तिम एषु युद्ध की ओर विशेष ध्यान करी दिया जाता, वहाँ राम धारण करने के करने हैं। सर्वमान में पीयूषर्ष की अनेक अर्थ-व्युत्पत्ति का ही अर्थिक अर्थ है। अन्तर में एक ही एक एक ही अर्थ दिखे जाते हैं।

आनदवर्धक

- (क) हाय हम ने भी फुलीनों की तरह ।
जम पाया प्यार से पाले गये ॥
ली-यचे फूले-कले तब क्या हुआ ।
कीट से भी नीचतर माने गये ॥
- (ग) छोड़ कर प्यारे पुराने धर्म को ।
बाज ईसाई मुसल्माँ हम बने ॥
नाय, कैसा यह निराळा न्याय है !
तो हमें सानन्द सब छूने लगे ॥

(रामचन्द्र शुक्ल)

- (ग) मञ्जरी सी अँगुलियों में यह कला,
ब्रेख कर मैं क्यों न सुख भूँँ भला ?
क्यों न अब मैं मत्त-बन-सा झूम लूँ ?
कर-कमल लाजा तुम्हारा चूम लूँ ।

(मैथिलीशरण गुप्त)

१६. सुमेरुं

१ ऊपर १६, १६ मात्राओं के इन दो छन्दों का वर्णन किया गया है—पीयूष-वर्ष तथा सुमेरु । सुमेरु के पादों का प्रथमाक्षर क्षप्र ही होता है परन्तु पीयूषवर्ष में लघु या गुरु कोई भी हो सकता है । सुमेरु के अन्त में दो गुरु कर्ण होते हैं और पीयूषवर्ष के अन्त में लघु, गुरु । दोनों की चाल में अन्तर भी स्पष्ट है ।

सुमेध के प्रत्येक पाद में १६ माध्याय होती हैं । यति १२७
माध्याय १०, ९ पर होती है । पाद का प्रथम वर्ण म्पु होता है
और पादान्त में यमण यहुन प्यारा लगता है । वैश्व—

(६) नहीं कैला मया, आत्म कमी म्,
धर्मो मे एव जल्प, गौरव ममी म् ।
ममा म्वाधी मुद्रित, हे देव मेरे,
मुली को ज्ञाय ! है, दुर्दय मेरे ॥

(त्रिपारान्त शरण मुद्र)

(७) जहाँ अनिषक-मम्पुद, छा रहे ये,
ममूतो-मे ममी मुद्र, वा रहे ये ।
यही परिष्कान मे पचर पड़े यो,
खड़े ही यह गये, मय ये गड़े उयो ॥

(८) ममार्गिन, देव कीई, क्या बरगा ?
एही यौरव धरम, बन, मे रहेगा !
विभव पर हाप ! म्, मय छोड़ती है,
मरम का काम का, गुम पावती है व

(मीपिणीशरण मुद्र)

१७ ईशानोक्ति

ईशानोक्ति के अन्त में २० माध्याय होती हैं । १० अन्त ९
माध्यायों पर यति होती है । अन्तिका ही वर्ण म्पु होने है ।
वैश्व—

(९) होने हैं छन्द इत्य विभववत् विभवित ॥

होता है गुण देख दृढ्य मानदित ॥
पर प्रिय लगता नहीं, रूप से दुर्गुण ।
बुरूपता को ढँक, देता है सदगुण ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

१८ चान्द्रायण

चान्द्रायण के हर चरण में २१ मात्राएँ होती हैं । ११ और १० मात्राओं पर यति होती है । इस की ११ वीं मात्रा जगण के अन्त में और १० वीं रगण के अन्त में आती है । जैसे—

(क) शिवे दस जरा सु चन्द्र, अयन कवि कीजिये ।
प्रभु जू दया-निषेत, शरण रख लीजिये ॥
नरवर विष्णु वृपाल, सबहिँ सुख दीजिये ।
अपनी दया विचारि, पाप सब मँजिये ॥

(भानु कवि)

(ख) धनदेयी गण आज, कौन सा पर्य है,
जिस पर इतना हर्ष, और यह गर्व है ?
जाता, जाना, आज, राम धन भा रहे,
इसी लिए सुख-साज, सजाये जा रहे ।

(ग) ऐ, ये घल्फल ! दृष्टि कहाँ मेरी रही ?
कौतुक, अथ तक देख न पाई वह यही ।

१—जग्यान्त ११ और रग्यान्त १० कलाओं से चान्द्रायण छन्द रचित ।

२, ३—कहीं कहीं यति-स्थलों पर जग्या-रग्या का विशेष ध्यान नहीं रखा गया है ।

उपर्युक्त स और न पद्यों के किसी किसी पाद में यति उचित स्थान पर नहीं पड़ती, परन्तु गति नितान्त निर्दोष है। हम कह ही चुके हैं कि आधुनिक फवि यति के नियम की बहुत अधिक परवा नहीं करते।

२०. विहारी

विहारी छन्द के प्रत्येक चरण में २२ मात्राएँ होती हैं। यति १४ और ८ मात्राओं पर होती है। जैसे—

(क) भूला न किसी भाति फडी टोक ठिकाना।

माना मनाग का न कहीं ठीक ठिकाना ॥

जीते अमख्य शत्रु रहा, दप दिखाता।

शय्या शरों की पाय मरा, धर्म लिखाता ॥

(ख) विज्ञान पाठ वेद-पदों, को पढा गया।

विद्या विलास विद्यवरों, का बढा गया ॥

सारे अस्सर पथ मतों, को हिला गया।

मानन्द-सुखा सार दया, का पिला गया ॥

(ग) लका जलाय काल खलों, को सुझा दिया।

भारे प्रचंड दुष्ट दिया, भी हृष्टा दिया ॥

हनुमान बली वीर-चरा, में प्रधान है।

महिमा अरापड ब्रह्मचर्य, की महान है ॥

(नाथूराम शर्कर)

१—क तथा स पद्यों का संग्रह यथाक्रम भोष्म पितामह
स्वामी दयानन्द सरस्वती की ओर है।

हरसि निरसि तुलसीदास, चरणनि रजपाई ॥

(तुलसीदास)

प्रथम पद्य के तृतीय पाद में यति उचित स्थान पर नहीं है ।

२२ उपमान (अन्य नाम—दृढ़पट वा दृढ़पद)

उपमान के हर एक पाद में २३ मात्राएँ होती हैं । १३ और १० मात्राओं पर यति होती है । प्रत्येक पाद के अन्तिम दो वर्ण गुरु हों तो अच्छा है, नहा तो अन्तिम वर्ण अवश्य गुरु चाहिए । जैसे—

कमी सुयश पाता नहीं, है अत्याचारी ।

निरुद्यमी होता नहीं, सुख का अधिकारी ॥

उसकी मजिल का नहीं, अन्त कर्मा होता ।

जो अ धा है एक तो, तिस पर है स्रोता ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

२३. रोला

रोला के प्रत्येक चरण में चौबीस मात्राएँ होती हैं । यति १३ तथा १३ मात्राओं पर होती है । जैसे—

(क) गूँज उठे अलि कूक, उठे कोकिल कुञ्जों में
फूल फूल कर फूल, उठे पादप पुञ्जों में ।
सख का यह आनन्द, मधुर सौरभ कर सगी
गंधवाह वह चला, तुम्हारी ओर उमगी ॥

(घ) करो नाथ स्वीकार, आज इस हृदय कुसुम को, ।

आइ भगुल लोग घरणै, युद्ध की सय गाथ ॥

(सरस पिंगल)

- (ग) राजर मुख के विलोकत, ही भये दुख दूरि,
सुप्रलाप नहीं रहे उर, मध्य आनँद पूरि ।
देह पावन द्व गइ पद, -पद्म को पय पाइ ।
पूजनै भयौ वश पूजित, आशु ही मुनिराइ ॥
- (घ) सनिधान भरे तपोधन धाम धी धन धर्म,
अद्य सर्वे सर्व भये निरव्येद्य वासर-कम ।
ईस यद्यप दृष्टि ही भई, भूरि मगल सृष्टि
पूँछिने कहँ होति है सो, तथापि धार्कविस्वृष्टि ॥
- (ङ) सींचि मत्र सजीव यौवन, जी उठी तेहिँ काल ।
पूँछियो मुनि कौन की दुहि, ता यहू अरु बाल ॥
हौं सुता मिथिलेश की, दशरथ-पुत्र-बलत्र ।
कौन दीपत जी न जानति, कौन आपुनु अत्र ॥
- (च) मुनिपुत्रिके, सुनि मोहिँ जानहिँ, बालमीकि द्विजाति ।
सर्वथा मिथिलेश को गुरु, सर्वदा शुभ भाँति ॥
होहिँगे मृत द्व सुधी पगु, धारिये मर्म ओर्क ।

१—युद्ध से भागे हुए ।

२—आप के । ३—शीघ्र । ४—तुरन्त । ५—विन्न-रहित ।

६—बोलना ।

७—लघु पडा जायगा । ८—घर ।

- (ग) तुम हौ अनन बनादि संवैग सर्वदा, संवैग ।
 अथ एक हौ, कि अनेक हौ, महिमा न जानत बह ॥
 भूमियो कर, जग लोक चौदह ब्रह्म मो, ह समुद्र ।
 रचना रची, तुम ताहि जानत हौ न ब्रह्म न रुद्र ॥
 (केशवदास)

२७ गीतिका

गीतिका के प्रत्येक पाद में २६ मात्राए होती हैं । यति १४ और १२ मात्राओं पर होती है और कमी कमी १२, १४ पर भी । अन्तिम दो वर्ण लघु, गुरु होते हैं । इस की ३ री, १०वीं, १७ वीं तथा २४ वीं मात्राए लघु होनी चाहिये । जैसे—

(क) ब्रह्मचारी ब्रह्मविद्या, का विशद, विश्राम था ।
 धर्मधारी धीर योगी, सब-सद्गुण-धाम था ॥
 कर्म-धीरों में प्रतापी, पर निरा निष्काम था ।
 श्री दयानन्दपि स्वामी, सिद्ध जिस का नाम था ॥

(घ) सत्यवादी धीर था जो, वाचनिक सधाम का ।
 साहसी पाया किसी को, भी न जिस के काम का ॥
 प्राण दे प्रेमी बना जो, प्रेम के परिणाम का ।
 क्या दया आनन्द धारी, धीर था वह नाम का ?

(ग) साधु भक्तों में सुयोगी, सयमी, बढने लगे ।
 सम्यता की सीढ़ियों पे, सुरमा चढने लगे ॥

निन विश्वास न छीनो हम से, किन्तु किमी भी ठौर।
(सियाराम शरण गुप्त)

- (ग) काम श्रोत्र मद लोभ मोह की, पँचरंगी कर दूर।
एक रंग नन मन वाणी में, भर ले तू भर पूर॥
प्रेम पसार, न भूल भलाई, पैर-विरोध विस्तार।
भक्ति-भाव से भज शकर को, धर्म दया उर धार॥
- (घ) देख ! कुहटि न पढ़ने पाये, पर-पतिता की ओर।
विपश किसी को नहीं सुनाना, कोई वचन कठोर॥
अपटा अपटों को न सताना पाय बड़ा अधिकार।
भक्ति भाव से भज शकर को, धर्म दया उर धार॥
- (ङ) माता पिता सुकवि गुरु राजा कर सब का सम्मान।
रुग्ण अनाथ पतित दीनों को दे जल भोजन दान॥
सुभट गदारि शिल्पकारों को, पूज सुयश विस्तार।
भक्ति भाव से भज शकर को, धर्म दया उर धार॥
(नाथूराम शकर)

२९. शुद्धगीता

शुद्धगीता छन्द के हर एक चरण में २७ मात्राप होती हैं।

१—वैद्य ।

२—सरसी और शुद्ध गीता दोनों छन्द २७, २७ मात्राओं के हैं, परन्तु दोनों की यति भिन्न भिन्न है, इस लिए पहचान आसान हैं।

मृग मे हग हैं किन्तु बनी सी, तीक्ष्ण दृष्टि आमोली।
 यड़ी कौन सी बात न उस ने, सूक्ष्म बुद्धि पर तोली।
 (घ) काठी-दाह में तू क्यों फूटा, डाँटा तो हँस बोला—
 'तू कहती थी—'और चुराना, तुम मक्खन का गोला।
 छत्रे पर रख ओढ़ेंगे सब, अथ मिड-भरा मटोला।
 निकर उड़ों वे मिड़ें प्रथम ही, भाग घचा में मोला ॥"
 (मंथिली शरण गुप्त)

(ङ) है यदि पुत्र स्वर्गप्रद तो फिर, धर्म सार्थक ही है।
 जिनके बहुत पुत्र हैं उनके, जीवन सार्थक ही हैं ॥
 बहु सुत जननी यरी कूषरी, अधम शूकरी नारी।
 नखी नागिनी भादि जीव क्या, कभी स्वर्ग अधिकारी।
 (च) शुद्ध वीच-समुदाय सभी यदि, पुत्रधान होने से
 सहज ऊर्ध्वगति पा सकते हैं, विषय बीज बाने से ॥
 तो फिर धृया कर्म-साधन सब, आद्यम धर्म धृया है।
 स्वर्ग लाभ करने की क्या ही, सच्ची सहज प्रथा है।
 (वियोगी हरि)

३१ हरिगीतिका

हरिगीतिका क प्रत्येक पाद में २८ मात्राएँ होती हैं। यत्रि

१ सार और हरिगीतिका दोनों २८, २८ मात्राओं के छन्द् हैं, और इन्की पति भी समान मात्राओं पर पढ़ती है। परन्तु दोनों की षास्त्र मं दिन-रात का अन्तर है, इस लिये पहचानने में कुछ कठिनता बही पढ़ती।

बैठे रहोगे और कय तफ, भाय फो रोते हुए ॥
(मैथिली शरण गुप्त)

(घ) निरुपाधि नारायण निरञ्जन, निर्भयामृत नित्य है ।
अत्ता अनादि अनन्त अनुपम, अन्न जल आदित्य है ॥
परिमू पुरोहित प्राण प्रेरक, प्राप्त पूज्य प्रवेश है ।
करतार तारक है तुही यह, वेद का उपदेश है ॥

(छ) कवि काल कालानल कृपा कर, केतु कव्याकन्द है ।
सुखदाम सत्य सुपर्ण सच्छिद्र, संप्रिय स्वछन्द है ।
भगवान भातुक-भक्त-घटसल, भू मिभू भुजेश है ।
करतार तारक है तुही यह, वेद का उपदेश है ॥
(नाथूराम शङ्कर)

३९. मरहटा

मरहटा छन्द के प्रत्येक भाग में २९ मात्राएँ होती हैं ।
पादांत में गुरु लघु होते हैं । यति १०, ८, ११ मात्राओं पर
होती है । जैसे—

(क) यह सुन गुरु घानी, धनु-गुन तानी, जामी द्विज दुख दानि ।
ताडका सँहारी, दारण भारी, नारी अति बल जानि ॥
मारीच विहायों, जलधि उतायों, मायों सरल सुबाहु ।
देवनि गुन पथ्यों, पुष्पनि चर्प्या, हर्षों अति सुरनाहु ॥

(ख) एक दिन रघुनायक सीय सहायक, रतिनायक अनुहारि ।
शुभ गोदावरि तट विमल पञ्च घट, बैठे हुते मुरारि ॥
छवि देखत हों तन, मदन मथ्यो भग, शूर्पनजा तेहि काल ।

सुनि यचन सुजाना, रोदन ठाना, ह्रुइ घालक सुरभूषा ।
 यह चरितजे गावहिँ, हरिपत्न पावहिँ, ते न परहिँ भवकृपा
 (तुलसीदास)

३६/ ताटक

ताटक के प्रत्येक पाद में ३० मात्राएँ होनी हैं । यति १६ और १४ मात्राओं पर होती है । हर चरण के अन्त में मगण (5 5 5) होता है । जैसे—

(क) घटनीय यह देश जहाँ के, देवी निज अभिमानी हों ।
 यान्धवता में वैंवे परस्पर, परता के अबानी हों ॥
 निन्दनीय यह देश जहाँ के देशी निज-अज्ञानी हों ।
 सब प्रकार परतत्र पराई, प्रभुता के अभिमानी हों ॥
 (श्रीधर पाठक)

(ख) देव तुम्हारे कई उपासक, कई ढग से आते हैं ।
 मेवा में बहुमूल्य भेंट धे, कई रग के लाते हैं ॥
 घूम धाम से साज-धाज से, वे मंदिर में आते हैं ।
 मुक्तामण बहुमूल्य वस्तुएँ, लाकर तुम्हें चढाते हैं ॥

(ग) फानपुर के नाना के मुँह, योली यहिन छरीली थी ।
 लक्ष्मीवाई नाम पिता की, यह सन्तान अकेली थी ॥
 भक्ता के संग पढ़ती थी यह, माना के समय खेती थी ।
 बरछी छाछ कृपाण फटारी, उस की यही सहेली थी ॥

(घ) इन की माया छोड़ चले हम, झाँसी के मैदानों में ।
 महा खड़ी है लक्ष्मीवाई, मर्द वनी यहाँ में ॥

- (घ) गुणी जनों के मन्त्रोंपधि से, चटपट उसका त्रिष उतरे ।
 अपने मन्त्रों से गुणियों का, सर्वनाश यह कितु करे ॥
 दोनों के प्रतिकार तोन है, विद्वानों ने घतलाए ।
 मुष-मदन या दात तोडना, या हट जाना जब आए ॥
 (रूपनारायण पाडेय)
- (ग) नहीं दान है नहीं दक्षिणा, पाली हाथ चली आई ।
 पूजा की भी त्रिधि न जाती, फिर भी नाथ चली आई ॥
 पूजा और पुनापा प्रभुवर, इसी पुजारिन को समझो ।
 दान-दक्षिणा और निडावर, इसी भिखारिन को समझो ॥
- (घ) में उन्मत्त प्रेम की लोभो, हृदय दिपाने आई हूँ ।
 जो कुछ भी है यही पास है इने चढाने आई हूँ ॥
 चरणों पर अर्पण है इस को चाहो तो स्वीकार करो ।
 यह तो वस्तु तुम्हारी ही है, डुकरा दो या प्यार करो ॥
 (सुभद्रा कुमारी चौहान)
- (ङ) होगा नहीं कहीं भी ऐसा, अति दुराटमा वह प्राणी ।
 अपनी प्यारी मातृभूमि है, जिससे नहीं गई जाती ।
 "मेरी जननी यह भूमि है", इस त्रिचार मे जिसका मन ।
 नहीं उमङ्गित हुआ वृथा है, उसका पृथ्वी पर जीवन ॥
- (च) क्या कोई ऐसा है जिसका मन न हर्ष से भर जाता ।
 दश त्रिदेश घूम कर जिस दिन, वह अपने घर को आता ।
 यदि कोई है ऐसा तो तुम, जाओ उसको भले प्रकार ।
 नाम न लेता होगा कोई, करता नहिं होगा सत्कार ॥
- (छ) पात्रै वह उपाधि यदि उत्तम, अथवा लक्ष्मी का भंडार ।

- पायजेय यज्ञ छनानान मारी टूक टूक वर्ष छहरानी ।
 विछियाँ अनधं अननानान मारी, हेरत हूँ नहिँ दिखरानी ॥
- (२) लाइन बरभो न कछू तरजो, फरो कछू ना निगरानी ।
 नाय पहेंगी नद यथा सों, न्याय पद्युक दे हैं छानी ॥
 यदि सकुचानी रग छन्दचानी, जमुदा मा की पहचानी ।
 यड़ी सयानी अयमर जानी, योली थानी नय-सानी ॥
- (६) उत ते आप कुंवर कदाई लखी मानु कछु यथरानी ।
 कछो मानु ये झूठी सय मुहिँ, पकर लेत बालक जानी ॥
 माखन मुद्य यरजोरी मेलत, चूमि कपोलन गहि पाती ।
 नाच अनेकन मोहि नचाय, रग तरगन सरसानी ॥
- (घ) भागत हूँ पाडो छोड़ें, यड़ी कठीली गुण मानी ।
 मुहिँ पहरायत लहंगा लुगरा, पहिरि चीर कोई मरदागी ॥
 येइ येइ येइ मुहिँ नाच नचायत, नित नेम मन मह ठानी ।
 मन मोहन की मीठी मीठी, सुनत घात सय मुसफानी ॥
- (भानु कवि)

३७ रुचिरा

१—ऊपर ३०, ३० मात्राओं वाले इन पांच छन्दों का वर्णन किया है—चौपैया, तटछ, लावनी, कुकुम, रुचिर । चौपैया और रुचिरा तो यति-भेद के कारण ही शीघ्र पहचाने जा सकते हैं । तटछ, लावनी और कुकुम की यति भी समान मात्राओं पर पडती है इस लिए इन की पहचान में अधिक सावधान होना पडता है । जब चारों प्रदों के अन्तिम तीनों

गौर वर्ण नृपमानु सुना का, कादो काले तन पर ताप
नाथ उतारो मार मुकुट को सिर पे सजो साहिरी टोप ।

(ग) पौडर चटन पौल, लपटा दानन की थी ज्योति जगाय ।
अजन अखियों में मत अँजो, आला ऐनक लेहु लगाय ॥
खधर कानों में लटका लो, कुडल काढ़ मेकराफून ।
तज पीताम्बर फमल काला, डाटो फोट और पनदून ॥

(घ) पटक पादुका पहिनो प्यारे, बूट इटाली का लुकदार ।
डालो डमरु गच पाकट में, चमके चेन फचनी चार ॥
रख दो गाठ गठीली लकुटी, छाता घेन चगन में मार ।
मुरली नाड मगोड घजाआ, गकी त्रिगुल नुने ससार ॥

(ङ) वननेय तज व्योम यान पे, करिए चारों ओर विहार ।
फरफर फ्रँ फ्रँ फ्रँ चुरदें, उगलें गाल धुआँ की धार ॥
यों उत्तम पदवी फटकारो, माधो, मिस्टर नाम धराय ।
वाँटो पदक नइ प्रभुता के, भारत जाति मक हो जाय ॥
(नाथूराम शङ्कर)

(च) बादशाह गरजा- 'ओ काफिर, सोच-समझ कर तू मुँहखोल
मुमन्मान हो ना, या अब क्या तुझ को भी मरना है बोल' ?
'करो मुसलमानी उन को जो, बेचार बच्चे अनजान ।
चाहे मेरा गला काट लो, मैं सदैव हिंदू-सन्तान ॥'

(छ) 'गला नहीं, सिर पर मारा रख, डालो इसे इसी दम चीर' ?
दात पीसने लगा फोघ से, आशा देकर आलमगीर ॥
चिरता रहा ठूँठ सा द्विजवर, प्रणय नाद का निधल ठाठ ।

(क) मुनि साप जो दीन्हा, अति भल कीन्हा,
 परम अनुग्रह, मैं माना ।
 देखिऊँ भरि लोचन, हरि भवमोचन,
 इहे लाभ श,कर जाना ॥
 विनती प्रभु मोरी, मैं मति मोरी,
 नाथ न माँगौं, घर आना ।
 पदकमल परागा, रस अनुरागा,
 मम मन-मधुप क,रै पाना ॥
 (तुलसीदास)

(ख) करि वदन विमडित, जोज अम्वडित,
 पूरण पडित ज्ञानपर ।
 गिरिनन्दिनि नदन, असुर निकदन,
 सुर उर चदन, कीर्तिकर ॥
 भूषण मृग लक्षण, धीर विचक्षण,
 जन प्रण रक्षण पाशचर ।
 जय जय गणनायक, खलगणघायक,
 दास सहायक, विघ्नहर ॥
 (दास)

(ग) परसत पद पावन, शोक नशावन,
 प्रकट भइ, तप पुज सही ।
 देवत रघुनायक, जन सुखदायक,
 सम्पुण है कर, जोरि रही ॥

सोहे सिंहासन, प्रभा प्रकाशन,
 कर्मविनाशन, दुखनाशन ॥
 सुग्रीव विभोपण, सुजन यधुजन,
 सहित तपोधन, भूपति गन ।
 आये सँग मुनि जन, सकल देवगण
 मृग तप कानन चतुरानन ॥
 (केशवदास)

४०. समान सवैया

समान सवैया के प्रत्येक पाद में ३२ मात्राए होती हैं। यति १६, १६ मात्राओं पर होती है और पादान्त में भगण (5 ॥) होता है। जैसे—

/ सोरह सोरह मत्त धरौ जू, छद समान सवैया सोभत ।
 श्री ग्युनाथ धरण नहिं सेवत, फिरत कहा तू इत उत जोहत ॥
 जय छगि शरणागत न प्रभु की, तब छगि भव-धाधा तुहिबाधत ।
 पापपुज हौं छार छनक में, शुभ श्री राम नाम आराधत ॥
 (मानु कवि)

४१ दडकला

दडकला के प्रत्येक पाद में ३२ मात्राए होती हैं। यति

१—ऊपर ३२, ३२ मात्राओं के तीन छन्दों (त्रिभगी, समान सवैया और दडकला) का वर्णन किया गया है। तीनों की यति और पादान्त के वर्ण भिन्न भिन्न हैं, इसलिए इन की पदचान में कोई कठिनता नहीं पडती।

के उदाहरणों में इन के लक्षणों को समन्वित करके दिखाओ।

- ३ तोमर उल्लाहा और सखी छन्दों में क्या भेद है ? उत्तर स्पष्ट और सचित्त होना चाहिए।
- ४ आप ने १४, १४ मात्राओं के जो छन्द पढ़े हैं, उन का परस्पर भेद स्पष्टतया उदाहरण सहित दिखाओ।
- ५ सखी, हाकलि और मधुमालती छन्द, छन्दों के कौन से प्रकार के अन्तर्गत हैं और क्यों ? इन का अन्तर स्पष्टतया प्रकट करो।
- ६ चांगोला, चौपाई और गुपाल—इन छन्दों के लक्षण और उदाहरण लिखो।
- ७ १५, १५ मात्राओं के छन्द कौन कौन से हैं ? उन का पारस्परिक भेद एक एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।
- ८ चौपाई, चौगोला और चौपैया छन्दों का स्वरूप, परस्पर भेद और उदाहरण विशद रीति से लिखो।
- ९ पादाकुलक और चौपाई की चाल तथा मात्रा-संख्या समान हैं। फिर इन दोनों में भेद क्या है ? उदाहरणों द्वारा उत्तर की पुष्टि करो।
- १० पद्धरि और शृंगार छन्दों में क्या भेद है ? उत्तर सोदाहरण हो।
- ११ १६ १६ मात्राओं के छन्दों के नाम तथा लक्षण मात्र लिखो
- १२ पीयूषपर्प, आनन्दयर्षक और सुमेरु छन्दों के लक्षण और उदाहरण देकर इनके पारस्परिक भेद को स्पष्ट दिखाओ।

यह स्वतंत्रता की चिनगारी, अन्तरतम से आई थी।

११ तू गरीब को निवाज, हों गरीब तेरो।

घारफ कहिए कृपाल, तुलसीदास मेरो ॥

१२. लोचन अभिरामा, तन घनदयामा, निज आयुध भुजचारी।

भूपन वनमाला, नयन विशाला, शोभा सिंधु खरारी ॥

१३. अथहुँ सुमिर हरि नाम शुभ, फाल जात बीता।

हाथ जोर विनती फरौं, नाहिँ जात रीता ॥

१४ वृष्णा सुमद्रा आदि को अत्रलोक कर रोते हुए।

हरि के हृदय में भी वहाँ कुछ, कुछ करुणरस-कण हुए ॥

१५ विद्या का भरपूर, इष्ट अभ्यास किया था।

पर औरों की भाँति, न कोई पास किया था ॥

१६ उसे व्यापती है तो केवल, यही एक भय-बाधा।

“कह दूँगी, खेलेगी तेरे, सग न मेरी राधा” ॥

१७ गभीर मौन ऊँची, वे शैल-श्रेणियाँ क्यों।

चिर काल से खड़ी हैं?, किसकी उन्हें प्रतीक्षा ॥

१८ पाय के नर-देह प्यारे, व्यर्थ माया में न भूल।

हो रहो शरणे हरी के, तौ मिटे भव जन्म शूल ॥

१९. देह पावन है गई पद-पद्म को पय पाइ।

पूजते भयो वश पूजित, आशु ही मुनिराय ॥

२० निर्दय बन कर करो और भी, जो करना हो और।

निज विश्वास न छीनो हम से, किन्तु किसी भी ठौर ॥

२१ अब अज्ञानी अँवरे, में पड़े मर जायँगे।

आप डूवेंगे अविद्या, देश में मर जायँगे ॥

निसि मलीन यह निसि दिन, यह विगसाय ।

- (घ) चपक हरषा अंग मिलि, अधिष सुहार ।
जानि परं मिय द्वियरे, जय कुम्हिलाइ ॥
- (ङ) सिअ तुम अग रग मिलि, अधिष उदोत ।
हार वरिं पहिरायो चंपक होत ॥
- (च) गरय घरहु रघुनदन, जनि मा माँह ।
दयहु आपनि मूरति, सिय के छोँह ॥
- (छ) स्याम गौर दोउ मूरति, छलिमन राम ।
हा ते भर सिन कीरति, अति अमिराम ॥
- (ज) विरह आगि उर ऊपर, जय अधिकाय ।
ए अँरियाँ दोउ धरिनि, दहिँ यताय ॥
- (झ) अय जीवन के है कपि, धाम न फोह ।
वनमुँटिया के मुँदरी, फवन होइ ॥
- (ञ) यहि गनती माँहँ गनती, जस यन घास ।
राम जपत भये तुलसी, तुलमीदास ॥
- (परचै रामायण)

(ठ) पीतम मिले सपनयाँ, मो सुग्य खानि ।

आनि जगायेसिँ चेरिया, मइ बुटादानि ॥

(ड) विरहिन और विदेसिया माँ इक ठौर ।

(—हार। २—एक सफेद फूल। ३—सत्रसे छोटी अँगुली।

४—इन छन्दों में कहीं कहीं गुरु वर्णों को लघुवत् पढ़ना पड़ेगा, तब ही छन्दों की गति ठीक होगी ।

- (घ) रेगो करी कमल की, कीनों जलसों हेत ।
 प्राण तज्यो प्रम न तज्यो, सूष्यो सरहि समेत ॥
 (सूरदास)
- (ङ) जो प्रियया मन्तन तजी, मूढ ताहि लिपटान ।
 ज्यों नर डारन धमन कर, ध्यान खाद सों घात ॥
- (च) फमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सय फोय ।
 पुरय पुरातन की षधू क्यो न चचला होय ॥
- (छ) 'रहिमन' भँसुवा नयन दरि, जिय बुझ प्रकट करय ।
 जाहि निकारो मेह ते, कस न मेद कहि देय ॥
 (रहीम)
- (ज) सीस मुकुट फटि फाछनी, धर मुरली उर माल ।
 यह यानिक मो मन धर्मो, सदा विहारी लाल ॥
- (झ) भूपन भार सँभारि हे, किमि यह तन मुकुमार ।
 सूये पाय न परत घर, सोमा ही के भार ॥
- (ञ) कय को टेरत दीन है, होत न स्याम सहाय ।
 तुमहू लागी जगत-गुर, जग नायक जग-शाय ॥
 (विहारी)
- (ट) मुह मागे, रण सुरमा, देत दान पर धतु ।
 सीस दान हू देत पै, पीठ दान नहीं देतु ॥
- (ठ) पर-भाषा पर भाष, पर-भूषण पर परिधान ।
 पराधीन जन की अहै, यह पूरी पहचान ॥
 (वियोगी हरि)
- (ड) सहज शत्रु हे मनुज के, चिर-निद्रा तन-रोग ।

- (ग) मङ्गल-मूल महेश, दूर अमङ्गल को करे ।
 ब्रह्म विप्रेक दिनेश मोह महातम को हरे ॥
 (नाथूराम शङ्कर)
- (घ) फूले फलइ न वेत, यदपि मुघा परसहिं जलद ।
 मूरप हृदय न चेत, जो गुघ मिलहिं विरचि सम ॥
- (ङ) जल पय सरिस विकाय, देपहु प्रीति कि रीति मल ।
 विलग होइ रस जाइ, कपट सटाई परत ही ॥
- (च) सो नर फ्यों दसकघ, बालि बधेउ जेहि एक सर ।
 बीसहु लोचन ब्र घ, घिग तघ जनम कुजाति जड ॥
- (छ) तव सोनित फी प्यास रुपित राम-सायक-निकर ।
 तजौ तोहि तेहि त्रास, फटु जटपक निसिचर अघम ॥
 (तुलसीदास)

५. उल्लाल

- उल्लाल छन्द के चारों चरणों में कुल १६ मात्राएँ होती हैं ।
 विषम चरणों में १५, १५ और सम चरणों में १३, १३ । जैसे—
- (क) कुछ मिथ्या से होता नहीं, भाँप उधार निहार लो ।
 सुप्र चाहो तो सदमात्र से शकर को उर धार लो ॥
- (ख) गरिमा न गही गोपाल की, ज्ञान न गुणियों से लिया ।
 शठ शकर लोभी लालची, पाय प्रचुर पूजी जिया ॥

१, २—इन वर्णों को लघुवन् पढ़ना पड़ेगा, सभी छन्द की
 चाल ठीक रहेगी ।

६. रुचिरा द्वितीय

इसके चारों चरणों में कुल ६० मात्राएँ होती हैं । विषम चरणों में १६, १६ और सम में १४, १४ । अन्तिम दो वर्ण गुरु होते हैं । यह छन्द, मात्रिक मम छन्द कुकुम का आधा है । जैसे—

- (क) हे भूतेश महायलवारी, तू सत्र सकट-हारी है ।
तेरी मगल-भूल-दया का, जीव यूथ अधिकारी है ॥
- (ख) धर्म वार जो प्राणी तुझ से, पूरी लगन लगाता है ।
विद्या, धर देता है उसको, भ्रम का भूत मगाता है ॥
- (ग) हे सुनिश्वकर्मा शिव म्रष्टा, तू कथ खाली रहता है ।
निर्विराम तेरी रचना का, स्नात सदा से बहता है ॥
- (घ) जो आलस्य विसार विवेकी, तेरे घाट उतरता है ।
उस उद्योग शील के द्वारा, सारा देश सुधरता है ॥
(नाथू राम शर्कर)
- (ङ) प्रतिघ्ननि ! प्रतिघ्ननि ! क्यों रोती है ? जले हृदयको रोने दे ।
आँसू की धारा से उसको, सारा विश्व मिगोने दे ॥
- (च) सुख मिलता है व्यथित हृदय को, अपनी यथासुनाने में ।
स्वयं तडपने में सुनने वा,ओं को भी तडपाने में ॥
(भगवती चरण धर्मा)

मदिमा अपनी माप, समझाते थे सब कहीं

- (ग) चौंके बिरचि सखर सहित, भोट कमठ अदि फलमल्यो ।
 प्रक्षाण्डप्रह कियो चरु धुनि, जयहिँ राम सिवचनु दल्यो ॥
- (घ) गान मरोम नाम बल, नाम सनेहु ।
 जगम जनम रघुनादा, गुनमहिँ देहु ॥
- (ङ) जिस गुण-हीन मान भागर ने । सब गुणधारी धारे हैं ।
 उस के परम भक्त गुन-योगी । श्री गुरुदेव हमारे हैं ॥
-

- (क) साईं सय ससार में, मतलब का व्यवहार ।
जब लय पैसा गाठ में तब लग ताको यार ॥
तब लग ताको यार यार सँग ही सँग टोलें ।
पैसा रहा न पास यार मुख मे नहिँ धोलें ।
कह गिरिधर कविराय, जगत यहि लेगा भाई ।
करत त्रेगरजी प्रीति, यार प्रिरला कोई साईं ॥
- (ख) साईं अक्सर के पडे, कौन सहे दुग्न द्वन्द्व ।
जाय विकाने डोम घर, वै राजा हरिचन्द्र ॥
वै राजा हरिचन्द्र, करै मरघट रख्यारी ।
घरे तपस्वी त्रेप, फिरे अजुन बलधारी ॥
कह गिरिधर कविराय, तपै वह भीम रसोई ।
को न करै त्रिटि काम, परे अक्सर के साईं ॥
- (ग) रिना विचारे जो करै, सो पाछे पछिताय ।
काम विगारे आपो, जग में होत हँसाय ॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पाय ।
खान पान सन्मान, राग रग मनहिँ न भावै ॥
कह गिरिधर कविराय, दुख कडु टरत न टारे ।
खटकत हँ जिय माहिँ कियो जो रिना विचारे ॥
- (घ) रहिय लटपट षाट दिन घरु घामें मा म्योय ।
छाह न चाकी वैठिय, जो तरु पतरो होय ॥
जो तरु पनरो होय, एक दिन धोखा वै है ।
जा दिन धहै ययारि, टूटि तब जर मे जै है ॥
कह गिरिधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये ।

मानो तपसी तप करे, मल कर भस्म शरीर ॥
 मल कर भस्म शरीर, तीर जय देगी मछली ।
 यह 'मीर' धूमि चोंच, समूची फौरन निगली ॥
 फिर मी धाय शरण, धर जो तज के अगला ।
 उन के भी तू प्राण हरे, रे छी ! छी ! बगला ॥

(अमीर अली मीर)

छप्पय (अन्य नाम पटपदी)

छप्पय में छ पाद होते हैं । ऊपर चार पाद रोला के
 और नीचे दो पाद उल्लाहा या उल्लाल के । इस लिए कहीं
 पर छप्पय में कुल १४८ मात्राएँ होती हैं और कहीं पर
 १५२ । जैसे—

(क) कोई पीडा हुई, जरा सी भी जय मुझ को ।
 मुझ से दूना दुख, हाय ! व्यापा तब तुझ को ॥
 रात रात भर तुझे, दगों में नींद न आई ।
 जिस प्रकार हो सका, शीघ्र यह व्यथा मिटाई ॥
 मेरे सुख में सुख था तुझे, दुख में दुख रहा सदा ।
 मुझ से सर्वत्र अभिन्न था, तेरा तन मन सर्वदा ॥

(ख) काटा मैंने नई उठी दन्तुली से तुझ को ।
 किया और भी अधिक प्यार तब तू ने मुझ को ॥
 छोट दिया जल शीत-काल में तेरे ऊपर ।
 तब भी तू ने प्रेम किया मा मेरे ऊपर ॥

जब इन बातों की याद ही, मुझ को आजाती कभी ।

लोट लोट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे ।
 उस में मिलते समय, मृत्यु से नहीं डरेंगे ॥
 उस मातृ-भूमि की घूल में, जब पूरे सन जायेंगे ।
 हो कर मय-वधन-मुक्त हम, आत्मरूप बन जायेंगे ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

(छ) छिपाटा हम न और रूख पीटा मर मंर कर ।
 पेल पेल कर तेल निकाला तुझ से जी मर ॥
 फिर दीपक म मर कर थोडा तूल मिलाया ।
 निर्दयता से रोद रोद कर तुम्हें जलाया ॥
 हम ने तो अस्तित्व तक नष्ट तुम्हारा कर दिया ।
 तुमने कहा! प्रकाशसे, अखिल भुवनको भरदिया ॥

(मोहनबाल महतो)

(ज) जिहि मुच्छन धरि हाथ, फट्टू जग सुजस न लीनो ।
 जिहि मुच्छन धरि हाथ, फट्टू परकाज न कीनो ॥
 जिहि मुच्छन धरि हाथ, फट्टू पर-पीर न जानी ।
 जिहि मुच्छन धरि हाथ, दीन लखि दया न आनी ॥
 मुच्छ नाहिं धे पुच्छ सम, फनि 'भरमी' उर आनिये ।
 वचन-लाज नहिं दान गति, तिहि मुख मुच्छन मानिये ॥

ॐ छ और ज पद्यों में उलाला ५२, ५२ मात्राओं का है
 शेष सब में ५६, ५६ का ।

१—मलमल कर । २—सरसों की ओर सकेत है ।

लोट लोट कर वहीं हृदय को शांत करेंगे ।
 उस में मिलते समय, मृत्यु से नहीं डरेंगे ॥
 उस मातृ भूमि की घूल में, जय पूरे सन जायेंगे ।
 हो कर मव रघन-मुक्त हम, आत्मरूप बन जायेंगे ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

(छ) ऋकाटा हम ने और खूब पीटा मर मर कर ।
 पेल पेल कर तेल निकाला तुझ से जी भर ॥
 फिर दीपक में भर कर थोडा तूल मिलाया ।
 निर्दयता से खोद खोद कर तुम्हें जलाया ॥
 हम न तो अस्तित्व तक नष्ट तुम्हारा कर दिया ।
 तुमने अहा! प्रकाशसे, अखिल भुवनको भर दिया ॥

(मोहनकाल महतो)

(ज) जिहि मुच्छन धरि हाथ, फट्टू जग सुजस न लीनो ।
 जिहि मुच्छन धरि हाथ, फट्टू परकाज न कीनो ॥
 जिहि मुच्छन धरि हाथ, फट्टू पर-पीर न जानी ।
 जिहि मुच्छन धरि हाथ, दीन लखि दया न भानी ॥
 मुच्छ नाहिं घे पुच्छ सम, फवि 'भरमी' उर आनिये ।
 घचन-लाज नहिं दान गति, तिहि मुख मुच्छन मानिये ॥

ॐ छ और ज पद्यों में उल्लाहा ५२, ५२ मात्राओं का है,
 शेष सब में ५६, ५६ का ।

१—मलमल कर । २—सरसों की ओर सकेत है ।

उन्हें ही उन छन्दों का मिलिन्दपाद कह देते हैं । पूर्वकाल में यह चाल न थी । सम छन्द चार चार चरणों के ही हुआ करते थे । परन्तु काल के साथ साथ कवियों के अन्तःकरण में भी परिवर्तन होता रहता है । इसी लिए शकर आदि कवियों ने छ छ पादों के छन्दों की रचना की है । जैसे, गीतिका मात्रिक सम छन्द है । गीतिका के नीचे गीतिका के दो पाद और रख दिए तो वह गीतिकात्मक मिलिन्दपाद कहा जायगा । इसका उदाहरण देखिए ।

गीतिकात्मक मिलिन्दपाद

- (फ) तर्क ज्ञान के झकोले, आडते चलने लगे ।
 युक्तियों की आग चेती, जालिया जलने लगे ॥
 पुण्य के पाँचे फरीले फूलने फलने लगे ।
 हाथ हत्यारे हठीले, मादकी मलने लगे ॥
 सेल देसे चेतना के, जड खिलोना खो गया ।
 देख लो लोगो दुयारा, भारतोदय होगया ॥
- (ख) तामसी थोथे मतों की, मोह माया हट गई ।
 घेंठ की पोली, पहाड़ी चण्डनों से फट गई ॥
 छूत छैया की बहूती, नाक लम्बी फट गई ।
 लालची पापण्डियों की, पेट पूजा घट गई ॥
 ऊत भूतों का बग्गेडा, डूब मरने को गया ।
 देख लो लोगो दुयारा, भारतोदय हो गया ॥

(नाथूराम शकर)

उन्हें ही उन छन्दों का मिलिन्दपाद कह देते हैं । पूर्वकाल में यह चाल न थी । सम छन्द चार चार चरणों के ही हुआ करते थे । परन्तु काल के साथ साथ कवियों के अतःकरण में भी परिवर्तन होता रहना है । इसी लिए शकर आदि कवियों ने छ छ पादों के छन्दों की रचना की है । जैसे, गीतिका मात्रिक सम छन्द है । गीतिका के नीचे गीतिका के दो पाद और रख दिए तो वह गीतिकात्मक मिलिन्दपाद कहा जायगा । इसका उदाहरण देखिए ।

गीतिकात्मक मिलिन्दपाद

(क) तर्क ब्रह्मा के ब्रकोले, आडते चलने लगे ।

युक्तियों की आग चेती, जालिया जलने लगे ॥

पुण्य के पौधे फरीले फूलने फलने लगे ।

हाथ हत्यारे इठीले, माठकी मलने लगे ॥

गेल देगे चेतना के, जड खिलोना रो गया ।

देख लो लोगो दुगारा, भारतोदय होगया ॥

(ख) तामसी थोथे मतों की, मोह माया हट गई ।

पेंठ की पोली, पहाड़ी, खण्डनों से फट गई ॥

छूत छैया की बलूती, नाक लम्बी कट गई ।

लालची पाखण्डियों की, पेट पूजा घट गई ॥

ऊत भूनों का घखेडा, डूब मरने को गया ।

देख लो लोगो दुगारा, भारतोदय हो गया ॥

(नाथूराम शकर)

पंचम अध्याय

मात्रिक दण्डक

जिन मात्रिक सम छन्दां के प्रत्येक चरण में मात्रा सख्या ३२ से अधिक हो, उन्हें मात्रिक दण्डक कहते हैं। इन के पाद इतने लम्बे होते हैं कि बीच में सास लेने के लिए अवश्य रुकना पड़ता है। यही दण्ड है और इसी से ये दण्डक कहे जाते हैं।

१. द्वितीय झूलना

द्वितीय झूलना प्रत्येक पाद में ३७ मात्राएँ होती हैं। यति १०, १०, १०, ७ मात्राओं पर होती है। पादान्त में यगण (। ५ ५) होता है। जैसे—

१ कनक गिरि-खुग चढ़ि, देखि मरकट-कटक,
घदत मन्दोदरी, परम भीता ।
सहसभुज मत्त-गजराज-रज केसरी,
परसुधर-गरुड जेहि, देखि बीता ॥
✓ 'दास तुलसी' समर, सूर कोसलघनी,
ख्याल ही बालि बल सालि जीता ॥

१—वानरों की छावनी । २—परशुराम । ३—सहज ही ।

धानगौरत्व-सी सिद्धिविस्तार-सी ॥
 कुन्द-सी फास-सी, भारती-यास-सी,
 सुरतरु निहार सी, सुधारस-सार-सी ।
 गङ्गाजल धार-सी, रजत के तार-सी,
 कीर्ति तव विजय की शम्भु आगार-सी ॥

(छन्दोऽर्णव)

अभ्यासार्थ प्रश्न

१. मात्रिक विषम छन्द किस कहते हैं ? उसका मात्रिक सम और मात्रिक अर्ध-सम छन्दों में क्या भेद होता है ?
२. मात्रिक सम, अर्धसम और विषम छन्दों का एक एक उदाहरण देकर उनके अन्तर को स्पष्टतया लिखो ।
३. कुडलिया और छप्पय को विषम छन्दों में क्यों गिनते हैं ? दोनों का एक एक उदाहरण देकर सिद्ध करो कि ये विषम छन्द हैं ।
४. मिलिन्दपाद छन्द कौन सा होता है ? उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो ।
५. क्या आर्या छन्द को मात्रिक अर्धसम छन्दों में नहीं गिन सकते ? उत्तर युक्ति-युक्त होना चाहिए ।
६. दडक छन्द किसे और क्यों कहते हैं ? मात्रिक साधारण और मात्रिक दडक में क्या भेद है ?
७. किसी मात्रिक दडक छन्द का नाम, लक्षण और उदाहरण लिखो ।

- ५ उक्त तीनों छन्द कितनी कितनी मात्राओं के हैं ? उदाहरण देकर इनके भेद को स्पष्टतापूर्वक लिखो ।
- ६ उद्दाला और रूप माला तथा गुपाल और दिक्पाल छन्दों के लक्षण, उदाहरण और पारस्परिक भेद स्पष्ट दर्शाओ ।
- ७ गीतिका, हरिगीतिका और शुद्ध गीता छन्दों के पारस्परिक अन्तर को विशदतया दिखाओ ।
- ८ २७, २९ मात्राओं के जो छन्द आपने पढ़े हैं, उन का स्वरूप और उदाहरण लिखो ।
- ९ सार और हरिगीतिका छन्दों में क्या भेद है ? एक एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो ।
- १० ताटक, लावनी और कुकुम छन्दों में क्या भेद है ? उदाहरण देकर वाक्य को स्पष्ट करो ।
- ११ चौपया और रुचिरा छन्दों के भेद को सम्यक् स्पष्ट करो ।
- १२ आप ने ३०, ३० मात्राओं के जो छन्द पढ़े हैं उन के नाम और लक्षण लिखो ।
- १३ मात्रिक सत्रैया और समान सत्रैया छन्दों के अन्तर को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट दिखाओ ।
- १४ त्रिमद्री, समान सत्रैया और दडकला छन्दों का स्वरूप उदाहरण और पारस्परिक भेद स्पष्ट करो ।
- १५ झूलना प्रथम तथा झूलना द्वितीय के भेद को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करो ।

विष वाग्ना यधु प्रिय जेहि ।
कहिय रमा-सम किमि वैदेही ॥

८ शरण जायो प्रभू, करहिँ दाया ।
तोरे पाँटे सँ, जाल माया ॥

९ इसा क्षण मूप न कुट शक्ति पाई ।
पिता न पुत्र की दृढ भक्ति पाई ॥
यदा कर बाहु तब ये छटपटाये ।
उठे पर पर उन के छटपटाये ॥

१० तुम हुस्न प्रभा की, वाकी ले फिर,
रिवि ने यह फरफद किया ।
चम्पकदल सोनजु ही नरगिस
आमीकर चपला चद किया ॥

११ जगत ईस नर भूप, सिया ढिग सोहत ।
गल वैजतो माल, सुजन मन मोहत ॥

१२ जब लगि शरणागत न प्रभु की,
तब लगि भय बाधा तुहि याचत ।
पाप पुञ्ज हों छार छतक में,
शुभ थी राम नाम आराधत ॥

१३ कहिय, ये किस लिए, बाज पहने गये ?
कहाँ राज-परिधान, और गहने गये ?

१४ विनती प्रभु मोरी, मैं मति भोरी,
नाथ न मार्गों, घर आना ।

पष्ठ अध्याय



वर्ण-सम-वृत्त (साधारण)

जिन छन्दों के चारों पादों में वर्ण-संख्या और वर्ण क्रम समान होते हैं, उन्हें वर्ण-सम-वृत्त कहते हैं। नीचे प्रमुख वर्ण सम वृत्तों का उल्लेख किया जाता है।

१, मल्लिका (र ज, ग ल)

(अन्यनाम—ममानी)

मल्लिका वृत्त के प्रत्येक चरण में रगण, जगण, गुरु और लघु के क्रम से आठ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) वागेश यूथ नाथ । लकनाथ-यन्धु साथ ॥

भोभिर्ज सत्रै समीप । देस देस के महीप ॥

(केशवदास)

(ख) खम्म तें प्रगट होय । दैत्य को सु-भङ्गु गोय ॥

मार के नृसिंह ताहि । पालिक सुसक्त चाहि ॥

(गदाधर मट्ट)

प्रेम नहीं तो, आदर क्या है ?
 प्यास नहीं ता, सागर क्या है ?

(रामनरेश त्रिपाठी)

भूमि सर्गी ना, मान वृथाही ।
 वृष्ण मगा है, या जग माही ॥
 ताहि रित्रैय, ज्यो प्रजवाला ।
 डारि गल म, चम्पकमाला ॥

(भानु कवि)

४. सारवती (भ भ भ, ग)

सारवती वृत्त के चारों चरणों में तीन तीन भगण और एक एक गुरु के क्रम से १०, १० वण होते हैं। जैसे—

देखि तत्रै भृगुनन्दन को ।
 छत्रिन के बुल वन्दन को ॥
 गोलि उठे, छिज हौं न डरौं ।
 आयु' ले अब जुद्ध करौं ॥

(गदाधर भट्ट)

५. शालिनी (म व त, ग ग) ४, ७

शालिनी वृत्त के प्रत्येक पाद में भगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से ११ वण होते हैं। यनि चौथे और सातवें वण के वाद होती है। जैसे—

लक्ष्मी दीजै, लोक में मान दीजै ।
 विद्या दीजै, सम्य स तान दीजै ॥

- (घ) द्विजाभास कोरे पहाना नहीं ॥
 करो प्यार पूरा सदाचार पै ।
 दुराचार से जी लगाना नहीं ॥
 निरालस्य विद्या बढ़ाते रहो ।
 अविद्या नटी को नचाना नहीं ॥
- (ङ) चलाना सदुद्योग से जीविका ।
 दिग्ग लोभ लीला फमाना नहीं ॥
 न चूको मिलो शङ्करानन्द से ।
 तिरि तर्क के गीत गाना नहीं ॥

(नाथूराम शङ्कर)

७ रथोद्धता (र न र, ल ग)

रथोद्धता वृत्त के प्रत्येक पाद में रगण, नगण, रगण और लघु, गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं । जैसे—

यात तोल फर सर्वदा कहो ।
 सावधान रल से सदा रहो ॥
 अत सोच तथ धार में बहो ।
 हानि ग्लानि सथ धैर्य से सहो ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

८. स्वागता (र न म, ग ग)

स्वागता वृत्त के हर एक चरण में रगण, नगण, मगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं । जैसे—

- (च) मन्द मन्द घुमि सों घा गाजें ।
 तूर तार जनु आयन बाजें ॥
 ठौर ठौर चपला चमकै यों ।
 इन्द्र लोरु तिय नाचति हैं ज्यों ॥

(केशवदास)

९ इन्द्रयज्ञा (त त ज, ग ग)

इन्द्रयज्ञा वृत्त क प्रत्येक पाद मे दो तगण, जगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं । जैसे—

- (क) मीता सु ले राघव औघ आये ।
 आनन्द सों मङ्गल गीत गाये ॥
 शोभा नय देखन चारु नारी ।
 ठाढी करै पुष्प सुवृष्टि भारी ॥

(गदाधर मट्ट)

- (ख) ससार ही एक अरण्य भारी ।
 हुप जहाँ है हम मार्गचारी ॥
 जो कर्म रूपी न कुठार होगा ।
 तो कौन निष्कण्टक पार होगा ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

- (ग) मैं जो नया ग्रन्थ त्रिलोकता हू ।
 माता मुझे सो नय मित्र साई ॥
 देखूँ उमे मैं नित बार बार ।
 मानो मिला मित्र मुझे पुराना ॥

(गिरधर शर्मा)

फ) थडा कि छोटा कुछ काम कीजै ।
परन्तु पूर्वापर सोच लीजै ॥
बिना विचारे यदि काम होगा ।
कभी न अच्छा परिणाम होगा ॥

(मैथिली शरण गुप्त)

(ख) अनेक ब्रह्मादि न बन्त पायो ।
अनेक प्रा घेन गीन गायो ॥
तिन्हें न रामानुज उधु जानौ ।
सुनो सुधी केवल ब्रह्म मानौ ॥

(केशव दास)

(ग) अनन्तकल्याणि, सुधास्वरूपे ।
मजीवता दो भर लेखनी में ॥
विशुद्ध धीणा लय माधुरी से ।
धनु वृषा-यात्र मनस्वियों का ।

(श्यामाकान्त पाठक)

(घ) निजेशया भूतल देहधारी ।
अधर्म-सहारक धर्मचारी ॥
चले दशग्रीवहिँ मारिवे को ।
तपी बती केवल पारिवे को ॥

(ङ) चले बली पावन पादुका लै ।
प्रदक्षिणा राम-सियाहु को दै ॥
गये त' नदीपुर घास कीनों ।

१—इस का उच्चारण लघुनू होगा ।

उपर्युक्त पद्य के आदिम अन्तिम चरण उपेन्द्रवज्रा के हैं और मध्यम दोनों इन्द्रवज्रा के ।

- (र) "ब्रह्मन् तजा पुस्तक-प्रेम भाप ।
 देता अभी हू यह राज्य सारा ॥'
 कहे मुझे यो यदि चक्रवर्ती ।
 "ऐसा न राजनू कहिए", कहूँ मैं ॥

(गिरिधर शर्मा)

इस पद्य का तृतीय चरण उपेन्द्रवज्रा का है, शेष सब इन्द्रवज्रा के । प्रथम पाद का अन्तिम वर्ण पादांत में होने का कारण ही गुरु माना गया है ।

- (ग) अखण्ड भण्डार भरा हुआ है ।
 सुवर्ण का जो मम गेह म ही ॥
 घताइए इ मम मित्र-वध्व्य ।
 क्यों लूँ किसी के फिर दान को मैं ॥

(गिरिधर शर्मा)

इस पद्य का चतुर्थ चरण इन्द्रवज्रा का है, शेष सब उपेन्द्रवज्रा के ।

- (घ) गिने हुए सज्जन शूद्र का तो ।
 कभी कभी मैं फरता सुमग ॥
 परन्तु है पस्तक मित्र ऐसा ।
 होता कभी जो मुझ से न न्यारा ॥

उक्त पद्य के पहिले तीन चरण उपेन्द्रवज्रा का हैं और चौथा इन्द्रवज्रा का ।

- फै कमला तिमला पति फोऊ ॥
 (घ) सुंदर श्यामल राम सु जानौ ।
 गौर सु लक्ष्मण नाम बखानौ ॥
 आशिष देहु इन्हें सर फोऊ ।
 सुरज के कुल-मडन दोऊ ॥
 (ङ) हौ भृगुनद गली जग माहीं ।
 राम त्रिदा कगिये घर जाहीं ॥
 हौ तुम से फिरि युद्ध हिमाडौं ।
 क्षत्रिय वश को बैर ले छाटौं ॥
 (च) राज-सभा न त्रिलोकिय फोऊ ।
 शोक गहे तव मोदर दोऊ ॥
 मंदिर मातु बिलोकि अकेली ।
 ज्यो त्रिा वृक्ष विराजति बेलो ॥
 (छ) मातु सर मिलिबे फहँ आई ।
 ज्यो सुत की सुरभी सुलवाई ॥
 लक्ष्मण स्यो उठि कै रघुराई ।
 पायन जाय परे दोउँ भाइ ॥
 (ज) मातनि कठ उठाय लगाये ।
 प्राण मनो मृत देहनि पाये ॥
 आइ मिलीं तव सीय मभागी ।
 देवर सासुन के पग लागी ॥

(केशवदास)

धिक ! वृथा हुई, ऊर्मिला व्यथा ॥

(घ) समय है अभी, हा ? फिरो फिरो,
तुम न यों यश, स्वर्ग से गिरो ।
प्रभु दयालु हैं लीट के मिलो,
न उनके कुटी द्वार से हिलो ।

(ङ) तुम मिलो मुझे, धर्म छोड़ के,
फिर मरूँ न क्यों, मुण्ड फोड़ के ?
यह शरीर लो, प्राण ये बुझे,
धर न हा सखी, छोड़ दे मुझे ॥

(मयिलीशरण गुप्त)

१४. भुजगप्रयात (य य य य)

भुजङ्ग प्रयात वृत्त के प्रत्येक पाद में चार यगण (155)
के क्रम से १२ वर्ण होते हैं । जैसे—

(क) जहा ऋज के कुज की मजुता थी,
लता पत्रिका पुष्पिता गुञ्जिता थी ।
जहा य हरे कुज के पुज प्यारे,
जहा ऋज ये भृङ्ग की गुज वारे ॥

(सरस पिंगल)

(ख) / अजन्मा न अरम तेरा हुआ है,
किसी स नहीं नम मेरा हुआ है ।
रहेगा सदा अन्त तरा न होगा,
किसी फाल म नाश मेरा न होगा ॥

(नाथूराम शङ्कर)

१८. अग्निणी (४ ४ ४ ४)

अन्यनाम—शृंगारिणी

अग्निणी वृत्त के प्रत्येक पाद में चार गण के क्रम में १२ धर्षण होते हैं । वेम—

(५) य गृही धन्य है जो मनोहारिणी
 सिद्धमार्गी सुनीला मद्भागिनि ।
 धर्मशीला मातो धीरता-धारिणी,
 सुदरी युत है प्रेम शृंगारिणी ॥

(रामनो-ग शिपात्री)

(६) रार, गी रीधिवा, श्याम सो क्यों करे ?
 मीन सो मान ले मान काहे घटे ?
 चित्त में भुरी मोघ न मानिये ।
 अग्निनी मूर्ति को वृष्ण की धारिये ॥

(भागुक्वि)

(७) राम बागे चले मध्य सीमा चली ।
 यशु पाये भये माम मोझे मारी ॥
 वेनि गेही मथै कोटिग के भगो ।
 जीय जीयेन के बीच माया मगो ॥

(८) जो रहो लक्ष्मणे तेन छाग्यो जहाँ ।
 मुष्टि छाती शत्रुमन मारयो नहीं ॥
 बाधु ही प्राण को नाश सो कै मयो ।
 दह दे सीनि में चेततो को मयो ॥

(केशवदास)

- (ट) षट् दाम न्यारहिं घाम जती ।
 त्रिवया हरि लीनी गई विरंती ॥
 तपसी घायन्त दरिद्र गृही ।
 कति बौतुक तात न नाम कही ॥
- (घ) सुत मानहिं मान पिता तय लीं ।
 अषण नहीं छोट परी जय लीं ॥
 समुरारि प्यारि लगी जय तें ।
 रिपु रुप दुद्रुम्य भयो मय तें ॥

(मुल्सीदास)

- (छ) तय पायन जाइ मरच परे ।
 उन भेट उटार कै बहुत मरे ॥
 सिर मूँघि विलोक बगार लई ।
 सुत तो बिन या विपरीत भई ॥
- (ज) यह बात सुनी गुपनाथ जय ।
 शर से लगे आ शर चिप स्वये ॥
 मुग ते बहुत धाम न जाइ कही ।
 अपराध बिना अरुपि देह कही ॥

(पेशवदास)

१—पैसा, घन । २—वैराग्य ।

३—इस का उच्चारण लघुवत् होगा ।

४—इस का उच्चारण लघुवत् होगा ।

(घ) जिते नर नागर लोग विचारि ।
सयं घर पै रघुनाथ निहारि ॥
किधौं परमानेंद को यह मूढ ।
विलोफत हौं सो हर सय शूढ ॥

(ग) न हौं मकराक्ष १ हौं हँदेजीत ।
विलोकि तुम्हें रण होइ न मीत ॥
सदा तुम लक्ष्मण उच्चम-गाथ ।
फरौं जनि आपनि मातु भनाथ ॥

(घ) विचोचन लोचरा हें लगि तोहिँ ।
तजौं हठ भानि भनौं किन मोहिँ ॥
क्षम्यो अपराध अजौं घर जाहु ।
दिये उपजाउ न मातहि दौहु ॥

(केशवदास)

(ङ) अदेयन की उर भानि भनीति ।
निषाहन को सुरपालन रीति ॥
सुवारन को जन को अधिकार ।
घरयो हरि घामन को भवतार ॥

(च) बड़े जन को नहिँ माँगन जोग ।
फर्य छल साधन में लघु लोग ॥

१—इस वर्ण का उच्चारण लघुवर् (सु के समान) होगा ।

२—कामदव । ३—इन्द्रजीत । ४—मत । ५—जलन ।

ब्रजागता बल्लभ को विलोकने ॥

(ङ)

धयम्क बूढ़े यह बाल बालिका ।

सभी समुत्कण्ठित औं अधीर हो ॥

सप्रेम आये द्विग मज्जु यान के ।

स्व-लोचनों की निधि-चाह बूटने ॥

(च)

स्वरूप होता जिसका न भय है ।

न वाश्य होते जिसके मनोद्व हैं ॥

अतीव प्यारा बनना सदैव है ।

मनुष्य सो भी गुण के प्रभाव से ॥

(छ)

सदा करूँगा अपमृत्यु सामना ।

समीत हूँगा न सुरेन्द्र-वज्र से ॥

कभी करूँगा अग्रहेलना न मैं ।

प्रधान धर्मात् परोपकार की ॥

(ज)

प्रवाह होते तक शेष श्वास के ।

सरक्त होते तक एक भी शिरा ॥

सशक्त होते तक एक लोम के ।

किया करूँगा हित सर्वभूत का ॥

(झ)

मुकुन्द चाहे यदु-वश के धनें ।

सदा रहें या वह गोप वश के ॥

न तो सबेंगे ब्रजभूमि भूल वे ।

न भूल देगी ब्रजमेदिनी उन्हें ॥

(अयोध्याप्रसाद उपाध्याय)

२१. द्रुतप्रिलिप्त (न भ भ र) अन्यनाम मुदरी

द्रुतप्रिलिप्तवृत्त के प्रत्येक पाद में नगण, दो भगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

- (क) विगत है जलजात निशा हुई ।
 घुतिमयी वह पूर्व दिशा हुई ॥
 छिप उलूक गये भय-भोति से ।
 भय विकास करो तुम प्रीति से ॥
- (ख) जनम से पहले विधि ने दिये ।
 रजत, राज्य, रयादि तुम्हें स्वयं ॥
 तदपि क्यों उसको न सराहते ।
 मचलते चलते हो तुम पृथा ॥
- (ग) तनिक चिंतित हो मत तू कभी ।
 भिट नहीं सकती भ्रितन्यता ॥
 सुकृत रक्षक है सब का सदा ।
 भवन में वन में मन ! मान जा ॥
- (घ) दुखित है धन-हीन, धनी सुखी ।
 यह विचार परिष्कृत है यदि ॥
 मन, युधिष्ठिर को फिर क्यों हुई ?
 विभ्रता भय ताप-विधायिनी ॥
- (ङ) मन ! रमा, रमणी, रमणीयना ।

१—कमल ।

२—'दि' पादान्त में होने से गुरु माना गया है ।

रोये बिना न छन भी मन मानता था ।
 हूयी महान द्विधा जनमडली थी ॥

- (ख) रोगी दुखी विपत-आपत में पड़े की ।
 सेवा अनेक करते निज हस्त से ये ॥
 ऐसा निजैत ब्रज में न मुखे दिखाया ।
 कोई जहाँ दुखित हो पर वे न होंरे ॥
- (ग) कुजें वही थल वही यमुना वही है ।
 वेलें वही, घन वही, विटपी वही है ॥
 हें पुष्प पल्लव वही, ब्रज भी वही है ।
 ए किन्तु श्याम बिन हें न वही जनाते ॥
- (घ) आ मन्द मन्द मन मोहन मण्डली में ।
 घातें वड़ी सरस ये सत्र को सुनाते ॥
 भाषों ममेत स्वर में मृदुता मिटा के ।
 या ये महा-मधु मयी मुरली बजाते ॥
- (ङ) फूले हुए कुमुद देग्य मरोरों में ।
 माधो सु-उसि यह ये सत्र को सुनाते ॥
 उत्कार्य देस निज अक्षपले शशी का ।
 है वारि-राशि मिस-कैरव दृष्ट होता ॥
- (च) फूलों दलों पर विराजित जोस वूँद ।
 जो श्याम को दमकती दुति से दिखाता ॥
 तो वे समोद कहने-चन-देत्रियों ने ।
 की है कला पर निछावर मुक्त माटा ॥
- (छ) कोई दुखी जन बिलोक पक्षीजता है ।

राजपुत्रिका समीप साधु धनु राखि कै ।
हाथ चाप बाण लै गये गिरीश नागि कै ॥

(ख) वेद मंत्र तत्र शोधि अस्त्र सर्र दै मले ।
रामचन्द्र छत्रपन सु विप्र छिप्र लै चले ॥
छोम छोम मोह गर्व काम कामना हई ।
नीद भूय प्यास घास घासना सबै गई ॥

(ग) आसँमुद्र के क्षितीश और जाति को गनै ।
राज-भौन भौज को सबै जने गये वनै ।
भाँति भाँति अन्न पान व्येजनादि जेवहीं ,
देत नारी गारि पूरि भूरि भूरि भेवहीं ॥

(घ) मत्त-दंति-राज-राजि धाजि-राज-राजि कै ।
हेम हीर मुक्त चीर चाय साज साजि कै ॥
वेप प्रेपयाहिनी अशेष वस्तु सोधियो ।
दाइ जो विदेहराज भाँति भाँति को दियो ॥

(ङ) देखि देखि कै बशोक राज पुत्रिका कह्यो ।
देहि मोहि आगि त जो अग आगि है रद्यो ॥
ठौर पाइ घात-पुत्र डारि मुद्रिका दई ।
आस पास देखि कै उठाय हाथ कै लई ॥

(केशवदास)

१—लाघ कर । २—शीघ्र । ३—नष्ट हो गई । ४—
समुद्र तक । ५—माग-भाजी । ६—भिगोती है । ७—हाथी ।
८—घोडे । ९—पक्ति । १०—दहेज । ११—लघु पढ़िए ।

२९ मालिनी (न न म य य) ८, ७

मालिनी के प्रत्येक पाद में दो नगण, मगण और दो यगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं । आठ और सात वर्णों के पाद विराम होता है । जैसे—

(क) यह कृपि कितनों की, अन्नदा प्राणदात्री,
अहह घन ! तुम्हारी, है रही प्रेमपात्री ।
जलधर, तुम ने ही, तो इसे था बढ़ाया ॥
फिर उपल गिरा के क्यों स्वय ही मिटाया ?

(ख) इन त्रिपट घरों ने, हे मरुत् । मोदकारी,
सुरभि मतत दे के, की सु-सेवा तुम्हारी ।
व्यथित अब इन्हीं को, यहि मे आज देख,
उजलित कर रह हो, और भी क्यों विशेष ?

(सियारामशरण गुप्त)

(ग) यह कुसुम भ्रमी तो, डालियों में घरा था ।
अगणित अमिळापा, और आशा-भरा था ॥
दलित कर इसे तू, काल क्या पा गया रे !
कण-भर तुझ में क्या, हा ! नहीं है दया रे !

(घ) सहृदय जन क जो, कण्ठ का हार होता ।
मुदित मधुकारी का, जीवनाधार होता ॥
वह कुसुम रँगाला, धूल में जा पडा है ।
नियति, नियम तेरा, भी घडा ही कडा है !

(रूपनारायण पांडेय)

(ङ) सह कर कितने ही, कष्ट औ सकटों को ।

तय उभय करों से, धामतीं वे फलेजा ॥
जय वह दियलाना, दूसरी ओर जाता ।
तज हृदय, करों से टाँपती यों हगों को ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

३०. चञ्चला (र ज र ज र, ल)

अन्यनाम—चित्र

चञ्चला के चारों चरणों में, रगण, जगण, रगण, जगण
रगण और लघु के क्रम से १६, १६ घर्ण होते हैं। अर्थात् इस
के प्रत्येक पाद में गुरु, लघु (५।) आठ आठ बार आते हैं।
जैसे—

(फ) रक्षित्री को यज्ञ कूल बैठ धीर साधधान ।
होन लागे होम के जहाँ तहाँ सर्व विधान ॥
भीम भाँति ताडफा सों भङ्ग लागी कर्न आय ।
घान तानि राम प न नारि जानि छाँडि जाय ॥

(केशवदास)

(ख) पक्षिराज यक्षराज प्रेतराज यातुघान ।
देवता अदेवता नृ देवता जिते जहान ॥
पर्वतारि अर्थ धर्म सर्व सर्वथा बयानि ।
कोटि कोटि सूरचन्द्र रामचन्द्र दासमानि ॥

(ग) रामचन्द्र जू कहत स्रवर्ण-लड्डु देखि देखि ।

१, २, ४—इन वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा ।

३—भयङ्करता से ।

- (ग) किये विशेष सों अशेष पाज वैद्यराय के ।
सदा त्रिलोक लोषनाय धर्म त्रिप्र गाय के ॥
अनादि सिद्धि राज-सिद्धि राज भाज लीजई ।
नृदेवतानि देवतानि दीद सुफ्र दीनई ॥
- (घ) न हों रहों न जाँजू विदेह धाम को अपै ।
फही जो पात मातु पै सों आज में सुती सयै ॥
लगे लुधा हि मा भली चिपात्त माँझ नारिये ।
पियास आस नीर धीर युद्ध में सम्हारिये ॥

३२. मन्दाक्रान्ता (म भ न त त, ग ग) ४, ६, ७

मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में मगण, भगण, नगण, दो सगण और दो गुरु के क्रम में १७ वर्ण होते हैं । ४, ६, ७ वर्ण पर विराम होता है । जैसे—

- (क) जैसे पाता, तृपित जन है, तृप्ति पानी पिये से ।
वैसे उर्वी, मुदित घन के, धारि से हो रही है ॥
शोभा पाती, विविध रँग के, शस्य से मेदिनी है ।
मानो कान्ता, रचिरतन पै, वेष भूपा किए हो ॥

(गोविन्ददास)

- (ख) जो रुडेगा, नृपति प्रज था, पास ही छोड डूंगी ।
ऊँचे ऊँचे भवन तज के जङ्गलों में बसूंगी ॥
खाऊँगी फू, ठ फल दल को, व्यङ्गनों को सजूंगी ।

१—प्राक्षय ।

२—में । ३, ४—इनका लघुवत् अक्षरय्य होगा ।

क्यों धाता ने, प्रिलग उनके, गान को यों किया है ॥
 कैसे आ के, गुरु गिरि पड़े, गीच में हैं उन्हीं के ।
 जो दो प्रेमी, मिलित पय औ, नीर लौं नित्यश ये ॥
 (इ) जो मैं कोई, विहग उडता, नेगती ध्योम में हू ।
 तो उत्कण्ठा, त्रिश चित में, आज भी मोचती हू ॥
 होते मेरे, निवल् तन में, पक्ष जो पक्षियों से ।
 तो यों ही मैं, समुद उडती, श्याम के पास जाती ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

५ ॐ शिखरिणी (य म न स म, ल ग) ६, ११

शिखरिणी क प्रत्येक पाद में यगण, मगण, नगण, सगण,
 भगण और लघु गुरु के क्रम में १७ वर्ण होते हैं । ६ और ११
 धर्णों के अनन्तर यति होनी है । जैसे—

(क) मिली मैं स्वामी से, पर कह सखी क्या समल के ।
 बहे आसू हो के, सखि ! सत्र उपालम्भ गल के ॥
 उन्हें हो आई जो निरख मुझ को नीरव दया ।
 उसी की पीना का, अनुभव मुझे हा । रह गया ॥

(मैथिली शरण गुप्त)

(ख) मनोहारी शय्या, परम सुघरी भूमितल की ।
 सुहानी क्या ही है, ललित बा के दूब-दल से ॥
 नदी के कूलों की, त्रिमल घर इन्दु-युति समे ।
 नई रती से जो, अति चमकती है निशि दिनै ॥

१, २—पादान्त होने के कारण ये वर्ण गुरु मान जायेंगे ।

क्यों धाता ने, त्रिलग उनके, गात को यों किया है ॥
 कैसे आ के, गुरु गिरि पड़े, बीच में है उहाँ के ।
 जो दो प्रेमी, मिलित पय औ, नीर लौं नित्यश ये ॥
 (झ) जो मैं कोई, त्रिहग उडता, देखती ध्योम में ह ।
 तो उत्कण्ठा, विप्रश चित में, आज भी सोचती ह ॥
 होते मेरे, निथल तन में, पक्ष जो पक्षियों से ।
 तो यों ही मैं, समुद्र उडती, श्याम के पाम जाती ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

३ शिखरिणी (य म न स म, ल ग) ६, ११

शिखरिणी के प्रत्येक पाद में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु गुरु के क्रम में १७ वर्ण होते हैं । ६ और ११ वर्णों का अनन्तर यति होती है । जैसे—

(क) मिली मैं स्वामी से, पर कह सकी क्या समल के ।
 वहे आसू हो के, सखि ! सर उपालम्भ गल के ॥
 उन्हें हो आई जो निरग्य मुझ को नीरव दया ।
 उसी की पीडा का, अनुभव मुझे हा । रह गया ॥
 (मधिली शरण गुप्त)

(ख) मनोहारी शय्या, परम सुघरी भूमितल की ।
 सुहानी क्या ही है, ललित वा के दृष-दल मे ॥
 नदी के कूलों की, तिमल घर इन्दु-द्युति समे ।
 नई देनी से जो अति चमकतो है निशि दिन ॥

१, २—पादान्त होने का कारण ये वर्ण गुरु माने जायेंगे ।

(क) देखि री घलभद्र मो,हन ग्याल घाडक सङ्ग में ।
 र्याग भातिन के करे, किलके महारस रङ्ग में ॥
 पाटनी कटिम कस, पट नील पील विसाल है ।
 चन्द्रमा घन जुच मा,नहुँ बड्क विघुन-जाल है ॥

(गदाधर मह)

- (ख) आइयो ते' हि काल ब्राह्मण यश को घल देवि के ।
 ताहि पूँछत बोलि के ऋषि भांनि भांनि विशेष के ॥
 सङ्ग सुन्दर राम ल,मण दान्य देखि सौ हंपई ।
 घंठि के सोइ राजम,डल घणई सुख यंपई ॥
- (ग) कौन हो कित त चले, किन जान हो केहि काम जू ।
 कौन की दुहिता यह, कहि कौन की यह धाम जू ॥
 एक गाँउर हो कि सा,जन मित्र य धु यगानिये ।
 देश के परदेश के, पिछौं पन्थ की पहिँ चानिये ॥
- (घ) हाइ हाइ जहाँ तहाँ, सयह रही सिगरी पुरी ।
 धाम धामान सु-दाी, प्रगटीं सयं जे हुतीं बुरी ।
 ले गये नृपनाथ को सय लोग श्री सरयू तटी ।
 राजपति समति पु,त्रनि विप्रलाप गदी रटी ॥

(केशवदास)

३५. शार्दूल विक्रीडित (म स ज स त त, ग) १२, ७

शार्दूलविक्रीडित के हर एक चरण में मगण, सजण, जगण,
 सगण, दो तगण और गुरु के क्रम में १९ वर्ण होते हैं । यति

१—४—आदि वर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा ।

इच्छा के अनुकूल कार्य सब मैं, हूँ साध लेता सदा ॥
 ज्ञाता है कहते मनुष्य वश मैं, है काल कर्मादि के ।
 होना है घटना-प्रवाह पतिता म्याधीनता यत्रिता ॥

(च) ऊँचे दाढ़िम से रसाल-तरु घे, औं आम्र से शिशपा ।
 यों निम्नोच्च असत्य पादप कसे, वृन्दाटरी यीच घे ॥
 मानो घे अबलोकने पथ रहे, वृन्दाघनाधीश का ।
 ऊँचा शीश उठा मनुष्य जनता के तुल्य उत्कठ हो ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

(छ) सायकाल हवा समुद्र तट की, नैरोग्य कारी यहा ।
 प्राय शिखिन सम्य लोम नित ही, आते इसी से वहाँ ॥
 बैठे हास्य विनोद मोद फरते, सानन्द वे दो घड़ी ।
 मो शोभा उस हृदय की हृदय को, है तृप्ति देती यड़ी ॥

(ज) छोटे और घड़ जहाज जल में, देखो वहाँ वे खड़े ।
 सो भी हृदय विचित्र, किन्तु हम को, वे हानिकारी घड़े ॥
 ले जाते घर वस्तु देश-भर की, जाने कहा की कहा ?
 लाते केवल ऊपरी चटक की, चीजें विदेशी यहा ॥

(कन्हैया लाल पोद्दार)

३६ स्रग्धरा (म र म न य य य) ७, ७, ७

स्रग्धरा वृत्त के प्रत्येक चरण में मगण, रगण, मगण,
 नगण और तीन यगण के क्रम से २१ वर्ण होते हैं । हर सातवें
 घण के बाद विराम होता है । जैसे—

नाना फूलों फलों से, अनुपम जग की,

घाटिका है विचित्रा ।

श्री मनमोहन रूप सुधा 'मदिरा'
 मद मोहि छकायहि तू ॥
 (भिखारी दास)

(ष) क्षत्रिन के प्रन युद्ध जुवा सजि
 याजि चढ़े गजराजन ही ।
 वैस को थानिज और कृपी प्रन
 शूद्र के सेवन-साजन ही ॥
 विप्रन को प्रन है जु यही सुख
 सम्पति सों कुछ काज नहीं ।
 के पढियो के तपोधन है फन,
 मांगत शीघ्रन लान नहीं ॥

(ग) चातक सवत में इक बूढ़ पिबै
 तिहि आश्रित प्रान रहै ।
 देपत चढ़ की ओर चकोर रहै
 मिलिये हु की आस गहै ॥
 प्रान-विधा न वने चकवान 'कों
 घाँस संयोग सदा 'ही लहै ।
 है न निमित्त हु मित्त ! इतो दुप
 चित्त फहौ किहि आति सहै ॥
 (अर्जुनदास केडिय)

(घ) * भासत एक गुरु मदिरा गुरु

* इस संज्ञे में अनेक संज्ञों के लक्षणा सूत्रों में दिए गए हैं । हमारे द्वारा दिए गए लक्ष्यों से इस का अर्थ स्पष्ट समझ में आजायगा !

श्री मनमोहन रूप सुधा 'मदिरा'
 मद मोहि छफाग्रहि तू ॥
 (मिखारी दास)

(ख) क्षत्रिन के प्रन युद्ध जुवा सजि
 याजि चदे गजराजन ही ।
 वैस की यानिज और कृपी प्रन
 शूद्र के सेवन-साजन ही ॥
 विप्रन को प्रन है जु यही सुख
 मन्पनि सों कुछ फाज नहीं ।
 के पढिवो के तपोधन है फन,

(ग) चातक सधत में एक बूढ़ पिचै
 तिहि आश्रित प्रान रहै ।
 देखत चद की ओर चकोर रहै
 मिलिवे हु की आस गहै ॥
 प्रान-विद्या न धनै चक्रान 'को
 धौस संयोग सदा ही लहै ।
 है न निमित्त हु मित्त ! इतो दुख
 चित्त फहौ किहि आंति सहै ॥

(घ) * मामत एक गुरु मदिरा गुरु
 (अर्जुनदास केडिय)

* इस सबैये में अनेक सबैयों के लक्षण सत्तेप में दि
 गए हैं । हमारे द्वारा दिए गए लक्षणों से इस का अर्थ स्पष्ट
 समझ में आजायगा !

३८. मत्तगयन्द सवैया (७ अ + ग ग)

(अच्यनाम मालती)

मत्तगयन्द सवैया के प्रत्येक पाद में सात भगण और दो गुरु के क्रम से २३ वर्ण होते हैं । जैसे—

- (क) जाल प्रपच पसार घने कुल गौरव का उर फाड रहा है ।
मानव मण्डल में मिल दाहक दानव दुष्ट दहाड रहा है ॥
जाति समुन्नति की जड को फर घोर कुक्षम उखाड रहा है ।
भूल गया प्रभु-शकर को जड जीवन जन्म विगाड रहा है ॥
(नाथूराम शकर)
- (ख) हो रहते तुम नाथ जहा रहता मन साथ सदैव यहीं है ।
मज्जुल मूर्ति दसी उर में यह नेक कभी टलती न कहीं है ॥
लोलुप लोचन को दिखती वह चारु घटा सब काल यहीं है ।
है वह योग मिला हम को जिस में दु ख मूल त्रियोग नहीं है ॥
(गोपाल शरणसिंह)
- (ग) प्राप्त-प्रयाण-कया सुन के उसके मुख-पफज का सुरझाना ।
और जरा हँस के उसका अपन मन का वह भाव छिपाना ॥
किन्तु अचानक ही उसके घर लोचन में जल का भर आना ।
समय है न कभी मुझ को इस जीवन में वह हृदय भुलाना ॥
(गोपाल शरणसिंह)
- (घ) या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिह पुर का तजि डारो ।
आठहुँ सिद्धि त्यों निधि को मुख नन्द की गाय चराय बिसारो ।
खान कही इन नैनन तें प्रज के बन धाग तडाग निहारो ।
कोटिन हू कलधौत के धाम करील की कुजन ऊपर धारो ॥

(ह) दाम की दाल छदाम के' चाउर घी अँगुरीन लें दूरि दिखायो
 टोनों सों नोन धरयो कछु आनि सबै तरफाँगी को नाम गनायो॥
 विप्र बुढाय पुरोहित को अपनी विपती सब भाँति सुनायो ।
 साहसी आज सराघ कियो सो मली विधि सों पुरखा फुसलायो
 (कविता कौमुदी)

३९. चकोर सवैया (७ भ + ग ल)

चकोर सवैया के चारों चरणों में सात सात भगण और
 गुरु लघु के क्रम से २३ २३ वर्ण होते हैं । जैसे—

(क) सोहत है तुलसी बन में

रुचि रास मनोहर नन्द किशोर ।

चारि हु पास है गोप वधू

मणि दास हिये में हुलास न थोर ॥

नीर-ज गोप वधून ' को आनन '

मोहन नैन भ्रमै जिमि भौर ।

मोहन-आनन चद लखे

घनिष्ठान के' लोचन चाह 'चकोर, ॥

(भिखारीदास)

(ख) हे प्रिय वधु, विरोध मिटा कर

प्रीति प्रचार करो सब ओर ।

१-११-इन वर्णों का ध्वारण लघुवत् होगा ।

(ख) द्विज वेद पढ़ें सुविचार धरें थल पाय चढ़ें सब ऊपर को ।
 अत्रिच्छ रहें ऋजु पथ गहें परिवार कहें वसुधा भर को ॥
 दुःख धर्म धरें पर दुःख हरें तन त्याग तरें भय सागर को ।
 दिन फेर पिता, पर दे सविता करदे कविता कवि शकर को
 (नाथूराम शङ्कर)

(ग) इसका अनुरूप कह किसको वह कौन सुदेश समुन्नत है ।
 समझे सुर लोक समान इसे उनका अनुमान असगत है ॥
 कवि शोविद वृन्द बखान रहे सब का अनुभूत यही मत है ।
 उपमान-विहीन रचा विधि ने यस भारत के सम भारत है ॥

(घ) पुर ते निकसी रघुवीर-वधु,
 धरि धीर दये मग में डग द्वै ।
 थलकी भरि भाल कनी जल की,
 पट्ट सुखि गए मधुराधर वै ॥
 पुनि बूझति है चलनोऽव किनो,
 पिय पनकुटी करिहो कित है ।
 तिय की लरि आतुरता पिय की,
 अँधिया अति चारु चलीं जल चं ॥

(ङ) यर दन्त की पगति कुन्दकली अधराधर पल्लव खोलन की
 चपला चमक घन बीच जगें छवि मोतिन-भाल अमोलन को
 घँघुरौरी लट्टें लटकें मुख ऊपर कुडल लोल कपोलन की ।
 निरछारि भान करै तुलसी बलि जाँउ ललाइन बोलन की ॥

१, २—इन वर्याँ का ब्यारण्य लघुवत् होगा ।

४१ वाम सवैया (७ जगण + यगण)

(अन्यनाम-मकरद)

वाम सवैया के प्रत्येक पाद में सात जगण और एक यगण के क्रम से २४ वणं होते हैं । जैसे—

(क) लसै द्विज औरहि मुत्तिय माल
पयोनिधि में उपजै नहि जो है ।
भय न सरोवर अबुज और
सुलोचन काह कुमारहि मोदि ॥
सरोरुह में न रहै अरु लच्छि
प्रतच्छ सुलच्छनि तो सम को है ।
सदा परिपूरन तो सुप्र राघे
सुधाधर और धरा पर सोदै ॥
(अलकार आशय)

(ख) लेप उर वानि डगै घर डीठि
त्यचाप्रति कुचै सकुचै मति-बेळी ।
ननै नवप्रीच थकै गति केशव
गलय ते सँगही सँग खेळी ॥
लिप सय आधिनि व्याधिनि सग

१—दाँव । २—मोतियों की माला । ३—लक्ष्मी ।

४—सुलक्षणा वाली । ५—चन्द्र । ६—दृष्टि ।

७—सिकुटे । ८—मुक जाती है । ९—मानसी व्यया

जान सका यह क्यों न मुझे
 फहने सत्र हैं वह है सब जानता ।
 है निश्च ही रहता उर में
 फिर क्यों न मुझे वह है पहचानता ॥

(गोपालशरणसिंह

(ख) आपु को वाहन ऋल गली
 वनिताडु को वाहन सिंहहिँ पेखि कै ।
 मूसे को वाहन है सुत एक सु
 दूजो मयूर के पच्छ विसेखि कै ॥
 भूपन है कवि "चैन" फनिंद के
 यैर परे सब ते सब लेखि कै ।
 सोन हूँ लोक के ईश गिरीश
 सु योगी भये घर को गति देखि कै ॥

(ग) साज सज्यौ नृप रामहिँ राज छौं
 रीति जया कुल वेद पुरान की ।
 चाँज बघाई भरी धुनि धामनि
 कोकिउ कठिन के फल गान की ॥
 सो सपनो सो भयो सपने ह
 न जानी वही भई घात अठान की ।
 बाहु अचानक सानुज जानकी
 जानकी जीवन के बन जान की ॥

जान सका यह क्यों न मुझे
 कहने सब हैं वह है सब जानता ।
 है निश्च ही रहता उर में
 फिर क्यों न मुझे वह है पहचानता ॥

(गोपालशरणसिंह)

(ख) आपु को याहन बल बली
 यनिताहु को याहन सिंहहिँ देखि कै ।
 मूसे को याहन है सुत एक सु
 दूजो मयूर के पच्छ विसेरि कै ॥
 भूपन है कवि "चैन" फनिद के
 घर परे सर ते सब लेखि कै ।
 तीन हूँ लोक के ईश गिरीश
 सु योगी भये घर को गति देखि कै ॥

(ग) 'साज सज्यौ नृप रामहिँ राज लौ
 रीति जथा कुल वेद-पुरान की ।
 वाजै बघाई भरी धुनि धामनि
 कोकिल कठिन के फल गान की ॥
 सो सपनो सो मर्या सपने हु
 न जानी घरी भई घात अठान की ।
 आजु अचानक सानुज जानकी
 जानकी जीवन के धन जान की ॥

जो जनरजन दुष्ट विभजन
गजन-गर्व 'हरी' सुझधाम है ।'

सोइ त्रिलोक को नाथ बली,
धृपमानुलली की गली को गुलाम है ॥

(वियोगी हरि)

(छ) आनन है अरविंदन फूले
बली-गन ! भूले कहा मँडरात हो ।

फौर तुम्हें कहा याई लगी
भ्रम विष के भोठन को ललचात हो ॥

'दासजू' ध्याली न घेनी-धनाय
है पापी कलापी कहा इतरात हो ।

घोलती बालना बाजती यीन
कहा सिगरे मिलि घेरत जात हो ॥

(भिखारीदास)

(ज) प्यार-पगे पिय प्यारे सों प्यारी !
कहा इमि कीजत मान मरोर है ।

है 'रतनाकर' पै निस्ति वासर
तो छवि-पानिय को तरसो रहै ॥

है मन मोहन मोहौ पै तो पर

घर नारि सती पति सों चित्त फाटत ॥
 भा विधिनां प्रतिकूल जयै
 तब ऊँट चढ़े पर कूकर फाटत ॥
 (कविता कौमुदी)

(ग) पुन्यहि पूरण पाप विनाशन
 निर्मल धीरति भक्ति घढायन ।
 दायक ज्ञान रु घायक मोह
 विगुह्य सुप्रेममयी मुद् पावन ॥
 श्रीमद् रामचरित सुमानस
 नीर सुभक्ति समेत नहावन ।
 'नायक' ते जन सूरज रूप
 जहान के ताप को ताप नसावन ॥
 (विनायक राव)

(घ) पायँन पीरिये पाँवरिया
 कटि केशरिया दुपटा छवि छाजित ।
 गुज मिले गजमोनिय हार में
 रीति सिर्तासित भाँति है भाजित ॥
 अग अपार प्रभा अल्लोकत
 होत हजार मनोर्भष छानित ।

१—द्वैव ।

२—नाशक । ३—खडाऊँ । ४—सफेद और काला ।

५—कामदेव ।

काहूँ सौं द्वै न सकौ जननी !

जग में अपनी ये स्वभाव निवारन ॥

(सेठ कन्हैयालाल पोद्दार)

४४. मुन्दरी स्रैया (८ स+ग)

मुन्दरी स्रैया के हर एक चरण में आठ सगण और एक गुरु के क्रम के २५ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) हम दीन दरिद्र हुताशन में,
दिन रात पड़े दहते रहते हैं।
बिन मेल विरोध महानद में
मन योहित से बहते रहते हैं ॥
कवि शङ्कर काल कुशासन की
फटकार फड़ी सहते रहते हैं।
पर भारत के गत गौरव की
अनुभूत कथा कहते रहते हैं ॥

(नाथूराम शङ्कर)

(ख) सुख शान्ति रहे सब ओर सदा
अधिवेक तथा अध पास न आवें।
गुण शील तथा बड़ बुद्धि बड़े
हठ बर विरोध घटें मिट जाय ॥
सब उन्नति के पथ में विचरें
रति-पूर्व परस्पर पुण्य कमावें ।

पट्टहास-घिलासन यों भवमीति

हमारी हरीं पृथमानु-दुलारी ॥

(अर्जुनदास केडिया)

(६) मुनिनाथ के गात रुमाचन साथहि

वो सहसा सिय-चाप उठायौ ।

नर नाथन के मुख मडल-साथहि

जो अपनी तल-ओर नमायो ॥

मिथिलेस-सुता मन-साथहि त्यों

गुन सँचिकै जो छिन माहिँ चढायौ ।

भृगुनाथ के गर्व भग्गडिन साथसो

मडित कै रघुनाथ गिरायौ ॥

(कन्हैयालाल पोद्दार)

४५ सुर (८ स+ल ल)

सुख सबैये के प्रत्यक पाद में आठ सगण और दो लघु के क्रम से २६ वर्ण होते हैं । जैसे—

सरजू-सरिता तट वाटिनी में रट

लागि रही घरटा यिन सफ हि ।

तिहिँ हौं समझै नहिँ फोकिल कों

चढि बैठयो जु काफ रसाल केँ अक हि ॥

सब ही की महानताँ दीवत हे जय

थान की आन परै जु अतक हि ।

१—६ इन वर्णों को लघु माना और पढ़ा जायगा ।

- ९ ११, ११ वर्णों के किन्हीं चार वृत्तों के नाम और लक्षण-मात्र लिखो ।
- १० भुजगी और भुजग प्रयाग छन्दों में क्या भेद है ? उदाहरण देकर विशद करो ।
- ११ भुजगप्रयाग, अग्नियणी और तोटक वृत्तों के भेद को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करो ।
- १२ मोतियदाम, तरलनयन और मोदक वृत्तों के उदाहरण लिख कर सिद्ध करो कि ये उदाहरण इन्हीं वृत्तों के हैं ।
- १३ द्रतविलम्बित, उदास्य और इन्द्रवशा छन्दों में से किन्हीं दो के लक्षण और उदाहरण दो ।
- १४ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के प्रत्येक पाद में चार यगण या चार रगण आने हों ।
- १५ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के हर चरण में चार सगण या चार जगण आते हों ।
- १६ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के चारों पादों में १२, १२ वर्ण लघु हों ।
- १७ १२, १२ वर्णों के वृत्तों में से जो चार वृत्त आप को सत्र से सुन्दर प्रतीत हों उनका एक एक उदाहरण दो ।
- १८ प्रहर्षिणी और कञ्ज अत्रलि वृत्तों में क्या भेद है ? दोनों का एक एक पाद लिख कर भाव को स्पष्ट करो ।
- १९ घसन्त निडका और मुकुन्द वृत्तों में से किसी एक का विस्तृत वर्णन करो ।

- ९ ११, ११ षणों के किन्हीं चार वृत्तों के लक्षण-मात्र लिखो ।
- १० भुजगी और भुनग प्रयात छन्दों में क्या भेद हरण देकर विशद करो ।
- ११ भुजगप्रयात, स्रग्विणा और तोटक वृत्तों उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करो ।
- १२ मोतियदाम, तरलनयन और मोदक वृत्तों में लिख कर सिद्ध करो कि वे उदाहरण-के हैं ।
- १३ द्रुतप्रितम्रित, वशस्थ और इन्द्रवशा छन्दों दो के लक्षण और उदाहरण दो ।
- १४ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के प्रत्येक पाद यगण या चार रगण आने हों ।
- १५ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के हर चरण में या चार जगण आते हों ।
- १६ कोई ऐसा पद्य लिखो जिस के चारों पाद उर्ण लघु हों ।
- १७ १२, १२ णों के वृत्तों में से जो चार रस से सुन्दर प्रतीत हों उनका एक एक उदाहरण प्रह्विणा और कञ्ज अवलि वृत्तों में क्या भेद का एक एक पाद लिख कर भाव को स्पष्ट करो ।
- १८ वसन्त निलका और मुकुन्द वृत्तों में से जो विस्तृत वर्णन करो ।

सप्तम अध्याय

वर्णार्धसम वृत्त

जिन छन्दों के पहले तथा तीसर और दूसरे तथा चौथे चरणों में घण सख्या और वर्ण-क्रम समान होते हैं, उन्हें वर्णार्धसम वृत्त कहते हैं। हिन्दी-भाषा में इन छन्दों का व्यवहार बहुत कम होता है तो भी हम ने इनका अति सक्षित घर्णन करना उचित समझा है, ताकि विद्यार्थी छन्द के इस भेद से नितान्त अनभिज्ञ न रह जायँ।

१. सुन्दरी

सुन्दरी वृत्त के विषम पादों में दो सगण, अगण और गुरु के क्रम में १०, १-वर्ण तथा सम पादों में सगण, भगण, रगण और लघु गुरु के क्रम से ११, ११ वर्ण होते हैं। इस प्रकार समस्त वृत्त में कुल ४२ वर्ण होते हैं। जैसे—

- (क) चिर-काल रसाल ही रहा,
जिस भावज्ञ कवीन्द्र का कहा।

(छ) विहगावली बोलने लगी,
यह प्राची पट खोलने लगी।
अट्टी हिल डोलने लगी,
सरसी सौरभ घोलने लगी ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

२. द्रुतमया

द्रुतमया वृत्त के विषम चरणों में तीन भगण और दो गुरु के क्रम से ११, ११ जगण होते हैं तथा सम चरणों में नगण, दो जगण और यगण के क्रम से १०, १२। इस प्रकार समस्त वृत्त में कुल ४६ वर्ण होते हैं। जैसे —

रामहिँ सेवहु रामहिँ गावो ।
तन मन दें नित सीस गमावो ॥
जन्म अनेकन के अघ जारो ।
हरि हरि गा निज जन्म सुधारो ॥

(भानुफवि)

३. पुष्पिताग्रा

पुष्पिताग्रा वृत्त के विषम चरणों में दो नगण, रगण और यगण के क्रम से १०, १२ वर्ण होते हैं और सम चरणों में नगण, दो जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३, १३। इस प्रकार समस्त छन्द में कुल ५० वर्ण होते हैं। जैसे—

(फ) फिरि फिरि अमि के कहै नवेली,
विधि यह कौन प्रकार की चमेली ।

कुछ भी न रहा सब नाश हुआ ॥
 रजनीश प्रताप-पतंग हुआ ।
 यस भारत का रस भग हुआ ॥

- (ग) मत भेद भयानक पाप रहा ।
 प्रिय प्रेम न मेल-मिलाप रहा ॥
 अस्मिमान अधोमुख ठेल रहा ।
 अधमाधम ढोंग ढकेल रहा ॥
 सुख जीवन का भग तग हुआ ।
 यस भारत का रस भग हुआ ॥

- (घ) अवधेश धनुर्धर राम नहीं ।
 ब्रजनायक श्री घनदयाम नहीं ॥
 अब कौन पुकार सुने इस की ।
 परमाकुल गैल गहे किस की ॥
 तड़पै मृग-तोय तरङ्ग हुआ ।
 यस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥

(नाथू राम शङ्कर)

जिस छन्द में भुजगी (य य य ल ग) के छ चरण हों,
 उ से भुजग्यात्मक मिलिन्द पाद कहते हैं । जैसे—

(ख) भुजगी-आत्मक मिलिन्दपाद

- (क) सुधी साधु को मान पाना न दो ।
 किमी दीन को एक दाना न दो ॥
 बड़े हो बड़ा दान देना चर्हा ।

मजेदार मूँछ मरोड़ा फरो ।
 निठले रहो काम थोडा फरो ॥
 चचाते रहो पान दौरे डली ।
 न विज्ञान फूला न विद्या फलो ॥

(नाथूराम शङ्कर)

(क) साधारण दडक

१. सुभानिधि (१६ बार ५ ।)

सुभानिधि के प्रत्येक पाद में १६ बार गुरु लघु के क्रम से ३२ वर्ण होते हैं। जैसे—

वा करै समाधि साधि का करै विराग जाग

का करै अोक योग भोगहू करै सु काह ।

का करै समस्त वेद ओ पुराण शास्त्र देखि

कोटि जन्म लो पढ़ै मिले तऊ कटू न थाह ॥

राज्य लै कहा करै सुरेश ओ नरेश है

न चाहिय फूँ सु दुःख होत लोक लाज माह ।

सात द्वीप गड ना त्रिलोक सपदा अपार

ले कहा सु कीजिये मिलें जु आप सीयनाह ॥

(काव्य सुधाकर)

२ अनगशेखर (ल ग यथेष्ट)

अनगशेखर के प्रत्येक पाद में वर्ण सख्या २६ से कम नहीं होती, अधिक चाहे जितनी हो। इस में लघु गुरु की अनेक आकृतिर्या होती है। यह भूलना न चाहिय कि चारों चरणों में वर्ण-सख्या समान ही रहेगी। जैसे—

तडाग नीर-हीन ते सनीर होत केशोदास

पुडरीफ झुड भौर मडलीन मडहीं ।

तमाल बल्लरी समेति सुखि सुखि कै रहे ते ?

१, २—इन वर्णों का उच्चारण लघुवन् होगा ।

(ख) चामर-सी चदन-भी चद्रिका-सी चन्द-ऐसी,
 चाँदनी चमेली चाह चाँदी-सी सुघर है ।
 कुद-सी कुमुद-सी कपूर-सी कपास-ऐसी,
 कटपतरु-कुसुम-सी कीरति-सी घर है ।
 'पूरण' प्रकास-ऐसी काँस-ऐसी हास-ऐसी,
 सुष के सुपास ऐसी सुयमा की घर है ।
 पाप को जहर ऐसी कलि को कहर ऐसी,
 सुधा की छहर ऐसी गगा की लहर है ॥
 (देवीप्रसाद पूर्ण)

(ग) चर्चा जहाँ देश भी हो मेरी जीभ उहीं खुले,
 और नहीं गुले कहीं सुदाकी खुदाई में ।
 मेरे कान गान सुने सँचे देश भक्तन के,
 और गान थात्रे कभी मेरे न सुनाई में ॥
 मेरे बग रग चढ़े एक देश-प्रेम को ही,
 और रग भग हो के वूड जा तराई में ।
 मेरो धन मेरो तन मेरो मन मेरो जीव,
 मेरो सर लगे प्रभो देश की भलाई में ।
 (गिरिधर शर्मा)

(घ) इन्द्र जिमि जम्भ पर वाडर सुभम्भ पर,
 रावण सदम्भ पर रघुकुल राज है ।
 पौन वारिवाह पर सम्भु रतिनाह पर,
 ज्यों सहस्रपाहु पर राम द्विजराज है ॥
 दावा हुमदड पर शीता मृगशुड पर

घणों पर विराम होता है। अन्तिम दो घण क्रमशः गुरु लघु होते हैं। शेष घणों में गुरु लघु का कोई नियम नहीं। जैसे—

(क) उमड घुमड घन घन धावत अटान थोट,
 छन घन जोति छटा छटक छटक जात ।
 सोर करँ चातक चकोर पिफ चहूँ ओर,
 मोर भ्रीव मोरि मोरि मटक मटक जात ॥
 सावन छौँ भावन सुनो है घनदयाम जू फो,
 भागन छौँ भाय पाय पटक पटक जात ।
 हिये विरहानल की सपनि अपार उर,
 हार गज मोतिन के चटक चटक जात ॥

(कविता कौमुदी)

(ख) कटकित केतकी गुलाब करि हारे, कारे,
 काकन से कोकिल, कलकित कलानिधान ।
 दरसँ दरिद्रन के दस पाच पूत प्राय,
 एकहि छौँ तरसै घनेस मनुजेस जान ॥
 अज में करीर, नीर नीरधि से खारे किए,
 दाता धन-हीन दीन, कृपन, समृद्धिमान ।
 नाम अज ही तें परै जान, पै अठान चार—
 धानन के कैसे एक धानन करै बखान ॥

(अर्जुनदास केडिया)

(ग) मगल करन हारे कोमल चरण चार,
 मगल से मान मही गोद में धरत जात ।

द्वारा स्पष्ट करो ।

५. वर्ष सम, वर्णाधिसम और वर्ण-विषम वृत्तों के पारस्परिक भेद को उदाहरणों द्वारा व्यक्त करो ।
६. मिलिन्दपाद छन्द कौन सा होता है ? किसी वर्णात्मक मिलिन्द-पाद का उदाहरण दो ।
७. ललित और भुजगात्मक मिलिन्दपाद के लक्षण लिखकर दोनों का एक एक उदाहरण दो ।
८. वर्ण दण्डक किन्हीं और क्यों कहते हैं?
९. वर्ण-दण्डक मुख्यतया कितने प्रकार के होते हैं, और उन का परस्पर क्या अन्तर है ?
१०. जब मुक्त दण्डकों में घण-भ्रम निश्चित नहीं होता तो उन्हें वर्ष वृत्त क्यों कहा जाता है ?
११. साधारण दण्डकों में से किसी एक का लक्षण और उदाहरण दो ।
१२. मुक्तक दण्डकों में से किस का प्रचार सर से अधिक है ? उसका लक्षण लिख कर दो उदाहरण दो ।
१३. रूप घनाक्षरी और जल हरण दण्डकों के भेद को उदाहरणों द्वारा व्यक्त करो ।
१४. घनाक्षरी और देवघनाक्षरी मुक्तकों के पारस्परिक अन्तर को स्फुट करो । दोनों का एक एक उदाहरण भी दो ।
१५. वर्ण वृत्तों के मुख्यतया कौन २ से भेद होते हैं ? सब का लक्षण और एक एक उदाहरण दो ।

- (घ) जो सय छोट सदा फिरते हैं, निर्गम्य देश विदेश ।
 तर्क-सिद्ध धेयस्फुर जिन में, मिलते हैं उपदेश ॥
 ऐमे धतिधि महापुरुषों का, कर सादर सत्कार ।
 भक्ति-भाय से भज शरर को, धम दया उर धार ॥

(नाथूराम शरर)

उपर्युक्त दोनों पद्य सरसीनामक मायिक छन्द में हैं, क्योंकि प्रत्येक पाद में मात्रा-संख्या २७ है, यति १६, ११ पर है, और पादान्त में शुरु लघु है । परन्तु इन दोनों में घर्ण-वृत्त के लक्षण भी घटते हैं । क्योंकि प्रत्येक पाद में ११ = के विराम से १९ घर्ण हैं । सौ दोनों के लक्षणों से युक्त होने के कारण ये उभय छन्द हुए ।

यहाँ यह बात याद रखनी चाहिए कि घर्ण-सम वृत्तों में भी घर्ण-संख्या, घर्ण-क्रम और फल-भ्ररूप मात्रा-संख्या समान होती है, परन्तु उन्हें उभय छन्द नहीं कहते । उभय छन्द तभी होगा जब मात्राएं अपनी संख्या में समान हों और घर्ण अपनी संख्या में, परन्तु घर्ण क्रम का नियम न हो । एक-दो उदाहरण और देखिए—

- (ग) दीपक पै कर प्यार, पतंग प्रताप दिखाते ।
 त्याग त्याग तन प्राण, प्रीति-रस-रीति सिखाते ॥
 जाना, अविचल-प्रेम, निष्ठुर से जो करते हैं ।
 वे उस प्रिय की रूप-मग्नि में जल मरते हैं ॥
- (घ) अपनी सन्तति काक' रूपण से पलवाती है ।
 पेड पेड पर घैठ, मुदित मङ्गल गाती है ॥

एकादश अध्याय

—४७६—

मुक्त या स्वच्छन्द छन्द

शताब्दियों से कविता मात्रा-रूपा, वर्ण-सख्या, घण-क्रम, यति, तुफ आदि की शृङ्खलाओं से बँधी चली आ रही थी। वर्तमान के कई विद्वानों का विचार है कि ये बन्धन कवि-कल्पना की स्वच्छन्द उड़ान में बेशरह बाधक बनते हैं। इन बन्धनों के कारण वह अपने भावों को उस स्वाभाविक और प्रभावशाली भाषा में प्रकट नहीं कर सकता जिसमें वे अनायास निकलना चाहते हैं। इसलिए कवियों के लिए उक्त बन्धन नहीं होने चाहिए। इसी मत के अनुसार अनेक देशी तथा विदेशी कवि कविता कर रहे हैं। उन की कविता में कोई पंक्ति १० अक्षरों की है तो कोई २० की, कोई पाद ६ मात्राओं का है तो कोई २५ का। ऐसे ही तुफ और यति के भी बन्धनों को भी तोड़ मरोड़ कर फेंक दिया गया है। नो मुक्त या स्वच्छन्द छन्द उसे कह सकते हैं जो मात्रा और वर्ण के पुराने बन्धनों से मुक्त हो और जिस में केवल भावों और लय का प्राधान्य हो। जैसे—

भारत की विधवा

यह इष्ट देव के मन्दिर की पूजा सी,
 यह दीप-शिखा सी शान्त भाव में लीन,
 यह फूर काल ताडव की स्मृति-रेखा सी,
 यह दूटे तरु की छुटी लता सी दीन—

दलित भारत की ही विधवा है ।

पड़ ऋतुओं का शृङ्गार,
 कुसुमित फानन में नीरव पद-सञ्चार,
 अमर कल्पना में स्वच्छन्द विहार—
 व्यथा की भूली हुई कथा है
 उसका एक स्वप्न अथवा है ।

(सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')

उपर्युक्त तीनों कविताओं में पुराने मात्रिक अथवा वर्ण-छन्दों की खोज करना समय-गोता है । परन्तु ऊँचे स्तरसे पढ़ने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसमें लय का अभाव नहीं है । ऐसे ही अर्थ विचारने पर सिद्ध होता है कि ये सभी कविताश उत्कट भावों से छलछला रहे हैं । सो हम नि शङ्क कह सकते हैं कि ये रचनाएँ स्वच्छन्द छन्दों में की गई हैं ।

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. उभय-छन्द किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर आशय को स्पष्ट करो ।

साधारण अभ्यास

- (क) १ “हर एक व्यक्ति छन्दों से प्यार करता है और हर एक अवस्था में प्यार करता है”—इस उक्ति पर अपने विचार विस्तार पूर्वक प्रकट करो ।
२. छन्दों के प्रारम्भ और विकास के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करो ।
३. छन्द-शास्त्र किसे कहते हैं ? संस्कृत और हिन्दी के प्रमुख छन्द-ग्रन्थों का परिचय दो ।
४. छन्द कितने हैं ? क्या उन की संख्या नियत की जा सकती है ? उत्तर युक्ति-युक्त होना चाहिए ।
५. छन्द शास्त्र में अक्षर वा वर्ण, गुरु, लघु, मात्रा, गति, यति, चरणा, दल और छन्द, किन्हीं कहते हैं ? अपने भाव को स्पष्ट करने के लिए प्रत्येक का उदाहरण भी दो ।
६. छन्द-शास्त्र में गण्य किसे कहते हैं । वे कितने प्रकार के होते हैं ? उन का महत्त्व क्या है ?
७. वर्ण्य वृत्तों में कौन से गण्यों से काम पड़ता है ? उन के नाम लक्षणा, उदाहरण, देवता तथा शुभाशुभ फल लिखो ।
८. कौन कौन से गण्य और अक्षर दूषित माने गये हैं ? यदि वे छन्दों के आरम्भ में आ जायें तो उन का दोष कैसे निवारण किया जाता है ?
९. तुक् कितने प्रकार की होती है ? प्रत्येक प्रकार की तुक् का एक एक उदाहरण दो ।

- ११ सनाढ्य-पूजा अध-ओघ हारी ।
अरुंड अरुंडल-लोक-धारी ॥
- १२ वताइए हे मम मित्र-वर्य ।
फ्यों लू किसो के फिर दान को मैं ।
- १३ दुई का घटाटोप घेरा रहेगा ।
मिटेगा नहीं मेल मेरा रहेगा ।
- १४ कर सुकथन, हृदय हरन ।
सुखद अमृत, सदृश वचन ।
- १५ देखि देही सत्रै कोटिधा के मनो ।
जीव जीवेश के धीच माया मनो ॥
- १६ तुम्ह तर्क ने तोल पाया नहीं ।
किसी युक्ति के हाथ आया नहीं ॥
- १७ सारे अरुपादि बलिष्ठ भारे ।
सप्राम में अगद वीर मारे ॥
- १८ कचन के उपवीर हि साजै ।
ब्राह्मणा सो यह सब विराजै ॥
- १९ समय था सुनसान निशीथ का ।
अटल भू तल में तम राज्य था ॥
- २० यह बात सुनी भृगुनाथ जबै ।
कहि रामहिं लै घर जाहु अबै ॥
- २१ मारग की रज तापित है अति ।
केशव सीतहि शीतल लागति ॥
- २२ भ्राता भरत्यादि करें प्रनाम हैं ।

१ सब सों ललुआ, मिलि कै रहिये
मम जीवन मूरि सुनौ मनमोहन ।

२ वान फल्यो तब रावण सों
अब बेगि चढाउ शरासन को ।

३ पिफ चातक कीर चकोर शिरवी
सन का अब तो अपमान करेंगे ।

४ सात मरे ससुरा पजरे
इस घाएर में पल को न रहुँगी ।

५ भीषन भोरहि त बनि पूषन
है जन के तन को बहु तावत ।

६ चेत करो, विक्र जीवन है यदि
नाम मिला जग में कुल धोर ।

७ तीन हु लोक कि ईश गिरीश सु
योगि भये घर की गति देखि कै ।

८ लहै भलि वाम अरु धन धाम
तु फाह भयो बिनु रामहिँ जाने ।

९ परिवार घना धन पास नहीं
मुज भ्रम दरिद्र भरा घर है ।

(घ) निम्न-लिखित पद्य वा पद्यांश किन छन्दों में हैं? उत्तर युक्ति-युक्त होने चाहिए ।

सरि, देख, दिगन्त है खुला ।

तम है, किन्तु प्रकाश से धुला ॥

८. क्रोध से विपाद से दया या पूर्व प्रीति ही से,
किसी भी वहाने से तो याद क्रिया कीजिए ॥
९. वर वेर वेर लै सराहै वेर वर बहु
रसिक त्रिहारी दत बैधु कहँ फेर फेर ।
१०. खोल दो नयन मत मुँह तरसाओ और
सुख तरसाओ प्रेम सुधा परमाओ तुम ।
११. मिल्ली मनकारैं पिक, चातक पुकारैं धन,
मोरनि गुहारैं उठै, जुगुनू चमकि चमकि ॥
१२. जन दीन दुखी कर्ता । हरता भय भीर को ॥
लोक तीनिहु में फैल्यो । श्लोक श्री रघुवीर को ॥
१३. जब दिनश की ओर, मोर करने मडते हैं ।
इन्द्र चाप तत्र अन्य घने धन पै पडत है ॥
नील अरुणा के साथ, पीत छत्रि दिखजान हैं ।
हम को मिश्रित रग, बनाना सिरल्लात हैं ॥
१४. पाल कुटुम्ब सदुद्यम-द्वारा भोग सदा सुख भोग ।
करना सिद्ध ज्ञान गौरव से, निश्रेयस प्रद योग ।
जप तप यज्ञ दान दवेगें, जीवन के फल पार ।
भक्ति-भात्र से भज शङ्कर को, धर्म दया उर धार ॥
- (नाथूराम शङ्कर)
१५. जागो फिर एक बार !
उगे अरुणाचल में रवि,
आई भारती रति कवि फठ में,

